ISBN: 978-93-5773-654-1

छात्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन (बाँदा जनपद के सन्दर्भ में)

- डॉ. राजीव अग्रवाल
- लवलेश कुमार यादव
- रोशनी

छात्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन (बाँदा जनपद के सन्दर्भ में)

डॉ. राजीव अग्रवाल

डीन-शिक्षा संकाय
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

लवलेश कुमार यादव

बी०एस-सी० (एग्रीकल्चर), एम०एड०

रोशनी

बी०एल०एड०

छात्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन (बाँदा जनपद के सन्दर्भ में)

डॉ. राजीव अग्रवाल
लवलेश कुमार यादव
रोशनी

©सर्वाधिकार सुरक्षित

E-book संस्करण: अप्रैल 2026
मूल्य: 79

ISBN: 978-93-5773-654-1

प्रकाशक -

रोशनी
चकजाफर, कर्वी, चित्रकूट
मो.-+91-9335192778
ई-मेल: roshaniyadav4720@gmail.com

प्राक्कथन

जैविक खेती कृषि की वह विधि है जो संश्लेषित उर्वरकों एवं संश्लेषित कीटनाशकों के अप्रयोग या न्यूनतम प्रयोग पर आधारित है तथा जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए फसल-चक्र, हरी खाद, कम्पोस्ट आदि का प्रयोग करती है। सन् 1990 के बाद से विश्व में जैविक उत्पादों का बाजार काफी बढ़ा है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक "छात्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन (बाँदा जनपद के सन्दर्भ में)" है। इस पुस्तक को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है-

प्रथम अध्याय में जैविक कृषि की अवधारणा, उद्देश्य, महत्व एवं घटकों का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में जैविक कृषि के सन्दर्भ में हुए कतिपय पूर्ववर्ती शोध कार्यों की समीक्षा की गयी है।

तृतीय अध्याय में शोध विधि, प्रतिदर्श चयन एवं शोध उपकरण का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गयी है।

पंचम अध्याय में निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबंध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसंधानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। अत: यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक- 16/04/2026
स्थान- चकजाफर, कर्वी, चित्रकूट

डॉ. राजीव अग्रवाल
लवलेश कुमार यादव
रोशनी

विषय सूची

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	तालिका सूची	VIII
	चित्र सूची	IX-X
प्रथम अध्याय	**अध्ययन परिचय**	**०१-१६**
	१.१ प्रस्तावना	१
	१.१.१ शिक्षा: विकास की प्रक्रिया	२
	१.१.२ भारत कृषि प्रधान देश	३
	१.१.३ जैविक कृषि की अवधारणा	५
	१.१.४ जैविक कृषि के उद्देश्य	५
	१.१.५ जैविक खेती के महत्व	६
	१.१.६ जैविक खेती को बढ़ावा देने की योजनाएँ	७
	१.१.७ जैविक खाद निर्माण की विधियाँ	८-९
	१.१.८ जैविक खेती से होने वाले लाभ	१०
	१.१.८.१ मिट्टी की दृष्टि से	१०
	१.१.८.२ कृषकों की दृष्टि	११
	१.१.८.३ पर्यावरण की दृष्टि से	११
	१.१.९ जैविक कृषि के घटक	११
	१.१.९.१ फसल और मृदा प्रबंधन	११
	१.१.९.२ पौष्टिक तत्वों का प्रबंधन	१२
	१.१.९.३ पादप संरक्षण	१२
	१.१.९.४ पशुधन प्रबंधन	१२
	१.१.९.५ मृदा जल संरक्षण	१२
	१.२ समस्या का प्रादुर्भाव	१२
	१.३ समस्या का कथन	१३
	१.४ समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या	१३
	१.४.१ जैविक कृषि	१३

Scanned with OKEN Scanner

	१.४.२ छात्राध्यापकों	१३
	१.४.३ जागरूकता	१४
	१.४.४ अध्ययन	१४
	१.४.५ बाँदा जनपद	१४
	१.५ अध्ययन के उद्देश्य	१५
	१.६ अध्ययन के चर	१५
	१.७ शोध परिकल्पना	१६
	१.८ अध्ययन का परिसीमांकन	१६
	१.९ अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता	१६
द्वितीय अध्याय	**संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**	**१७-२०**
	२.१ प्रस्तावना	१७
	२.२ जैविक कृषि के सन्दर्भ में हुये कतिपय शोध	१७
	२.३ अध्ययन से संबन्धित लेख, समाचार, पुस्तकें इत्यादि	१८
	२.४ समीक्षात्मक निष्कर्ष	२०
तृतीय अध्याय	**अध्ययन अभिकल्प**	**२१-२७**
	३.१ शोध विधि	२१
	३.२ अध्ययन समष्टि	२१
	३.३ प्रतिदर्श चयन	२१
	३.४ न्यादर्श चयन विधि	२२
	३.५ शोध उपकरण	२३
	३.६ प्रश्नावली का निर्माण	२३
	३.७ परीक्षण का प्रशासन	२४
	३.८ परीक्षणों का फलांकन	२४
	३.९ सांख्यिकीय प्रविधियाँ	२५-२७
चतुर्थ अध्याय	**प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या**	**२८-५३**
	४.१ विद्यार्थियों में जैविक जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण	२८-५१
	४.२ छात्र-छात्राओं में जैविक जागरूकता का तुलनात्मक अध्यय	५२-५३

Scanned with OKEN Scanner

पंचम अध्याय	निष्कर्ष एवं सुझाव	५४-६०
	५.१ निष्कर्ष	५४-५७
	५.२ शैक्षिक उपादेयता	५८
	५.३ अध्ययन हेतु सुझाव	५९
	५.४ अध्ययन की सीमाएं	५९
	५.५ भावी शोध हेतु सुझाव	६०
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची		
परिशिष्ट		

Scanned with OKEN Scanner

तालिका सूची

तालिका संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
३.३.१	प्रतिदर्श चयन का आकार तथा उसका आकार	२२
३.४.१	न्यादर्श चयन में चयनित महाविद्यालय तथा छात्र-छात्राएं	२२
४.२.१	लिंग के अनुसार विद्यार्थियों मे मध्यमान एवं मानक विचलन के बीच अन्तर की सार्थकता	५२

Scanned with OKEN Scanner

चित्र सूची

तालिका संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
४.१.१	जैविक कृषि	२८
४.१.२	समान्यतः कब-कब जैविक उत्पाद खरीदते हैं	२९
४.१.३	जैविक उत्पाद कहाँ से खरीदते हैं	३०
४.१.४	जैविक उत्पाद खरीदते हैं	३१
४.१.५	जैविक उत्पाद चुनते हैं	३२
४.१.६	उत्पादों का अधिक प्रयोग	३२
४.१.७	अपने खेतों मे प्रयोग करते हैं	३३
४.१.८	वृद्धि एवं विकास के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता	३४
४.१.९	जैविक खाद बनाने की पद्धति	३५
४.१.१०	रासायनिक खाद्य के अधिकाधिक प्रयोग से बढ़ रहे रोग	३५
४.१.११	राष्ट्रीय जैविक केंद्र	३६
४.१.१२	भारत का सम्पूर्ण जैविक राज्य	३७
४.१.१३	भारतवर्ष मे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार	३७
४.१.१४	जैविक कृषि वातावरण के प्रति दयालुतापूर्ण/हितैषी	३८
४.१.१५	अपनी खेती के खरपतवार, कीट एवं रोगो पर नियंत्रण बिना रसायनों के नहीं	३९
४.१.१६	जैविक कृषि वैदिक कालीन कृषि पद्धति	३९
४.१.१७	जैविक कृषि आधुनिक कृषि की तुलना में अधिक लाभदायक है	४०
४.१.१८	आजकल जैविक कृषि अधिक लोकप्रिय है	४१
४.१.१९	जैविक कृषि आज के समय मे व्यावहारिक नहीं	४१

Scanned with OKEN Scanner

४.१.२०	जैविक कृषि किसानो को अपने ज्ञान एवं कौशल के उपयोग का अवसर प्रदान	४२
४.१.२१	जैविक कृषि मानव तथा मृदा दोनों के स्वस्थ्य के लिए हितकारी है	४२
४.१.२२	आधुनिक कृषि से निराश किसानो के लिए जैविक कृषि एक वरदान	४३
४.१.२३	आयसेनिया फिटिडा नामक केचुआ मृदा के लिए हानिकारक है	४४
४.१.२४	आप कृषक परिवार से हैं	४४
४.१.२५	कृषि एवं भूमि का क्षेत्रफल	४५
४.१.२६	आपके परिवार मे कृषि की जाती है	४६
४.१.२७	जैविक उत्पाद स्वास्थ्यवर्धक है	४६
४.१.२८	जैविक उत्पादों की कीमत अधिक होने पर भी उन्हें खरीदेंगे	४७
४.१.२९	जैविक उत्पादों से कम कैलोरी प्राप्त होती है	४८
४.१.३०	जैविक किसान उर्वरकों का प्रयोग नहीं करते	४९
४.१.३१	जीरो बजट प्राकृतिक खेती महंगी है	४९
४.१.३२	जैविक कृषि गौ आधारित है	५०
४.१.३३	भारतीय कृषि मे उर्वरकों का प्रयोग हरित क्रान्ति के बाद बहुतायत से होने लगा	५१
४.१.३४	वर्टिकल फ़ार्मिंग द्वारा बहुमंजली इमारतों मे खेती की जाती है	५१
४.२.१	लिंग के अनुसार जैविक कृषि जागरूकता के आधार पर मध्यमान व मानक विचलन	५२

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम अध्याय अध्ययन परिचय

१.१ प्रस्तावना

जैविक खेती कृषि की वह विधि है जो संश्लेषित उर्वरकों एवं संश्लेषित कीटनाशकों के अप्रयोग या न्यूनतम प्रयोग पर आधारित है तथा जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए फसल-चक्र, हरी खाद, कम्पोस्ट आदि का प्रयोग करती है। सन् 1990 के बाद से विश्व में जैविक उत्पादों का बाजार काफी बढ़ा है।

सम्पूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गम्भीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की अपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग परिस्थितिकी तन्त्र (प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान के चक्र) को प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ-साथ गौ पालप किया जाता था, जिसके प्रमाण हमारे ग्रन्थों में प्रभु कृष्ण और बलराम हैं, जिन्हें हम गोपाल एवं हलधर के नाम से सम्बोधित करते हैं अर्थात् कृषि एवं गौपालन संयुक्त रूप से अत्यधिक लाभदायी था जोकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में गौपालन धीर-धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह-तरह की रासायनिक खादो व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थों के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे।

Scanned with OKEN Scanner

१.१.१ शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा किसी राष्ट्र के नव निर्माण एवं उसकी संस्कृति की वाहक होती है| शिक्षा के गौरवशाली अतीत पर ही उसके वर्तमान की दिशा निर्धारित होती है| शिक्षा संस्कार पैदा करती है जो राष्ट्र के लिए ऊर्जा का कार्य करती है| संस्कारों के निर्माण में माता- पिता एवं समाज के साथ- साथ महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में शिक्षक का स्थान निर्धारित किया गया है| शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया एवं सामाजिक व्यवस्था का आधारभूति स्तम्भ है शिक्षक एवं शिक्षा घनिष्ट रूप से अंतर्संबंधित है संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया जिसका उद्देश्य मानव निर्माण एवं राष्ट्र की प्रगति करना है, का स्रोत शिक्षक ही माना जाता है| शिक्षा न केवल पथ- प्रदर्शक, ज्ञानवर्धक एवं प्रगति की द्योतक होती है बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय गरिमा को संरक्षित एवं संवर्धित करती है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यवहार का परिमार्जन एवं परिष्करण किया जाता है जिससे वह समाज का सभ्य, सुसंस्कृत, एवं समायोजनशील प्राणी के रूप में विकसित होता है|

शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार, उसकी कार्यप्रणाली एवं जीवनवृत्त में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है। वर्तमान परिदृश्य में शैक्षिक आयोजनों की सार्थकता वहीं तक है जिस सीमा तक वह मानवीय एवं सामाजिक आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं की अभिपूर्ति कर सके। वर्तमान वैश्विक परिवर्तन के दौर में व्यक्ति के आकांक्षा स्तर में अत्यधिक वृद्धि हो गई है तथा इनकी पूर्ति न होने पर वह कुण्ठा एवं भग्नासा से ग्रस्त हो जाता है। व्यक्ति अपनी इच्छाओं की संतुष्टि किसी भी परिस्थिति में करना चाहता है। इसलिए शिक्षा के उत्तरदायित्व एवं भूमिका में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। आज विकास की तीव्र दौड़ में वहीं शिक्षा व्यवस्था उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण मानी जाती है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करता है।

शिक्षा की सशक्त संरचना के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में नवजागरण आता है जो सामाजिक परिवर्तन एवं गतिशीलता का सूचक होता है क्योंकि यदि समाज में किसी कारण वश परिवर्तन की दशा उत्पन्न न हो या उसकी प्रभावशीलता कम हो तो समाज की गतिहीनता भी समाप्त होने लगती है ऐसी स्थिति में या तो सामाजिक व्यवस्था ही समाप्त हो जाती है अथवा उसमें अराजकता जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

शैक्षिक व्यवस्था के सफल संचालन में समाज एवं शासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है किंतु शैक्षिक प्रक्रिया का सफल संचालन योग्य एवं कुशल तथा प्रशिक्षित शिक्षक के माध्यम से ही संभव है, जो निर्धारित पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्र का सर्वांगीण विकास करता है। इसलिए उसे शिक्षा का एक ध्रुव माना जाता है जैसे कि

रायबर्न ने कहा- "शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शैक्षिक पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया जाता है।"

कृषक, खेती व्यवस्था का प्रमुख ध्रुव है अतः उसमें अपेक्षित गुणों का समुचित विकास आवश्यक है। इसीलिए कृषकों को प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रदान की गई है।कृषकों को दक्षता एवं उनके कार्यात्मक अभिक्षमता में वृद्धि करने हेतु प्रशिक्षण के माध्यम से गुणवत्ता संवर्धन का प्रयास किया जाता है किंतु इन सब प्रयासों के बावजूद भी बहुत से कृषकों में अपेक्षित दक्षताओं का विकास नहीं हो पाता।

कार्यात्मक दक्षता के विकास में उनकी बौद्धिक क्षमताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है कृषकों में अपेक्षित दक्षता के विकास हेतु उसमें सांवेगिक दक्षता ,बौद्धिक कारक एवं शिक्षण अभिक्षमता जैसे दक्षताओं का होना अपेक्षित रहता है।इनके समुचित एवं संतुलित विकास के अभाव में कृषक की दक्षता दिशा समुचित दिशा में अग्रसित नहीं हो सकती है। अतः कृषकों की दक्षता विकास हेतु उनको प्रशिक्षण प्रदान किया जाना आवश्यक एवं अनिवार्य है।

१.१.२ भारत एक कृषि प्रधान देश

भारत एक कृषि प्रधान देश है कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है भारत में कृषि सिंधु घाटी सभ्यता के दौर से की जाती रही है १९६० के बाद देश में कृषि के क्षेत्र में हरितक्रांति के साथ नया दौर आया भारत की खेती से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार हैं :

(१) भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग ५१ फ़ीसदी भाग पर कृषि ४ फ़ीसदी पर चारागाह लगभग २१ फ़ीसदी पर वन और २४ फ़ीसदी बंजर और बिना उपयोग की है।

(२) देश की कुल श्रम शक्ति का लगभग ५२ फ़ीसदी भाग कृषि और इससे संबंधित उद्योग और धंधों से अपनी आजीविका चलाता है।

Scanned with OKEN Scanner

(३) २००४-२००५ में भारत के निर्यात में कृषि और संबंधित वस्तुओं का अनुपात लगभग ४० फ़ीसदी रहा।

(४) विश्व में चावल उत्पादन में चीन के बाद भारत का दूसरा स्थान है भारत में खाद्यान्नों के अंतर्गत आने वाले कुल क्षेत्र के करीब ४७ फ़ीसदी भाग पर चावल की खेती की जाती है।

(५) विश्व में गेहूं उत्पादन में चीन के बाद भारत का दूसरा स्थान है देश की कुल कृषि योग्य जमीन के लगभग १५ फ़ीसदी भाग पर गेहूं की खेती की जाती है।

(६) देश में गेहूं के उत्पादन में उत्तर प्रदेश का प्रथम स्थान है जबकि प्रति हेक्टेयर उत्पादन में पंजाब का प्रथम स्थान है।

(७) हरितक्रांति का सबसे अधिक प्रभाव गेहूं और चावल की कृषि पर पड़ा है परंतु चावल की तुलना गेहूं के उत्पादन में अधिक वृद्धि।

(८) भारत में हरितक्रांति लाने का श्रेय डॉक्टर एम० एस० स्वामीनाथन को जाता है भारत में हरितक्रांति की शुरुआत १९६७-१९६८ में हुई।

(९) प्रथम हरितक्रांति के बाद १९८३-१९८४ में द्वितीय हरितक्रांति की शुरुआत हुई, जिसमें अधिक अनाज उत्पादन, निवेश और किसानों को दी जाने वाली सेवाओं का विस्तार हुआ।

(१०) तिलहन प्रौद्योगिकी मिशन की स्थापना १९८६ में हुई।

(११) भारत विश्व में उर्वरक का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता देश है।

(१२) पोटैशियम फर्टिलाइजर का पूरी तरह आयात किया जाता है।

(१३) आम, केला, चीकू, खट्टे नींबू, काजू, नारियल, काली मिर्च, हल्दी के उत्पादन में भारत का स्थान पहला है।

(१४) फलों और सब्जियों के उत्पादन में भारत का स्थान दुनिया में दूसरा है और सरकार किसानों को बर्बाद करने पर लगी है।

Scanned with OKEN Scanner

१.१.३ जैविक कृषि की अवधारणा

यह उत्पादन प्रबंधन प्रणाली आमतौर जैविक पदार्थों या खेत आधारित संसाधनों, फसलों के अवशिष्ट पदार्थों, मवेशियों के गोबर, हरी खाद, खेतों और उनके बाहर के अपशिष्ट, ग्रोथ रेगुलेटरों, जैव उर्वरकों, बायो पेस्टिसाइड़ आदि पर आधारित है। इनमें खेतों से बाहर के कृतिम पदार्थों (उर्वरकों, कवकनाशकों, खरपतवारनाशकों आदि) के उपयोग को हतोत्साहित किया जाता है ताकि मिट्टी, पानी और हवा को प्रदूषित किए बगैर लम्बी अवधि तक प्राकृतिक संतुलन को कायम रखा जा सके। इसमें खेती के लिए किसी स्थान विशेष से सम्बंधित फसल वैज्ञानिक, जैविक और यांत्रिक विधियों का उपयोग किया जाता है ताकि संसाधनों का पुनर्चक्रण हो सके और कृषि परिस्थितकीय तंत्र पर आधारित स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया जा सके।

१.१.४ जैविक कृषि के उद्देश्य

1. कृषि में रासायनों का उपयोग न करना।
2. प्राकृतिक संतुलन को बरकरार रखना।
3. पौष्टिक आहार का उत्पादन।
4. ग्रामीण अजीवका को लाभप्रद, जैविक खेती के जरिए बढ़ावा देना।
5. मिट्टी और पानी जैसे संसाधनों का संरक्षण
6. फसल उत्पादन के साथ-साथ पशुधन का व्यवस्थिति विकास।
7. जैव विविधता और परिस्थितिकीय प्रणाली सम्बंधी सेवाओं का संरक्षण और संवर्धन।
8. प्रदूषण की रोकथाम।
9. खेती में जीवाश्म ईंधन से प्राप्त ऊर्जा का उपयोग कम करना।
10. अधिक टिकाऊ और उत्पादक कृषि प्रणाली का विकास करना।

Scanned with OKEN Scanner

१.१.५ जैविक खेती का महत्व

खेती सम्बंधी गतिविधियों की चुनौतियाँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। उदाहरण के लिए खेती की लागत बढ़ गई है; पानी की कमी होती जा रही है और खेती के लिए मजदूर मिलना मुश्किल होने लगा है। ऐसे में अगर हम खेती की वर्तमान प्रणाली का उपयोग करते रहें तो इससे सामाजिक आर्थिक समस्याओं के और गम्भीर होने के साथ-साथ परिस्थितिकीय तन्त्र के नष्ट होने का खतरा बढ़ सकता है। इसलिए हमें समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा और सघन खेती की तुलना में पारम्परिक खेती के फायदों को ध्यान में रखते हुए अधिक फायदेमन्द तरीके अपनाने होंगे। देश की विकास प्रक्रिया में कृषि प्रणाली ज्यादा अहम भूमिका है। चाहे यह भूमिका रोजगार के सृजन में हो, जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने की हो या पौष्टिक आहार एवं स्वास्थ्य में सुधार हो लेकर हो। यानि आज खेती के स्मार्ट तौर-तरीकों के चयन और उन्हें अपनाने पर बहुत कुछ निर्भर है।

ऐसी कोई भी गतिविधि जिससे पर्यावरण में खराबी आती हो, वह फसलों की उत्पादकता और मानव स्वास्थ्य पर भी असर ड़ालती है। जैविक खेती वह प्रणाली जो स्वास्थ्य, परिस्थितिकी, अवचित्त और मानव व परिस्थितिकी तन्त्र की देखभाल के चार बुनियादी सिद्धान्तों पर आधारित है। फसलों में विविधता लाने, पशुधन प्रबंधन और फसलों में खाद देने से जहाँ जैव विविधता का संरक्षण होता है, वहीं इससे प्राकृतिक संस्थानों के संरक्षण में भी मदद मिलती है। जैविक खेती प्रणाली में नाइट्रेट लीचिंग बहुत कम होती है जिससे भू जल के प्रदूषण की रोकथाम होती है। जैविक सामग्री के उपयोग से मिट्टी में जैव प्रक्रियाएँ बढ़ जाती हैं जिससे उसे लम्बे समय तक उपजाऊ बनाये रखने में मदद मिलती है।

खेती की कीमत बाहरी सामग्री के उपयोग में कमी से उत्पादन लागत घटाई जा सकती है। इससे मुख्य फसल के नष्ट होने की आशंका को कम से कम किया जा सकता है और कृषि वानिकी, अदला-बदली से फसल उगाने और एक फसल के साथ दूसरी फसल उगाकर खेती में विविधता लाई जा सकती है। किसानों को जैविक उत्पादों के अधिक दाम मिलते हैं और वे जैविक तरीके से उगाये गए कृषि पदार्थों के विशेष बाजार में भी पहुँच हासिल करते हैं इससे उनकी क्रय क्षमता आंगे बढ़ जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

महिलाएँ कृषि सम्बंधी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं उनके योगदान पर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करने के लिए 15 अक्टूबर को महिला किसान दिवस का आयोजन किया जाता है। महिलाओं की खेती-बाड़ी सम्बन्धी गतिविधियों में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिए भारत सरकार ने उन्हें केन्द्र में रखकर नई नीतियाँ और कार्यक्रम तैयार किये हैं। जैविक खेती में विविधता लाकर (फसल, पशुधन आदि)। रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं। जिससे ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण होता है। जैविक खेती अपनाने से किसानों का जीवन स्तर उठाने में मदद मिलती है।

१.१.६ जैविक खेती को बढ़ावा देने की योजनाएँ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने १ अप्रैल २०१६ से कृषि फसल बीमा योजना शुरू की है ये सब काम कृषि कार्य को बढावा देने के लिए ही किया जा रहा है।

देश में जैविक खेती के कुल रकबे का लगभग ४० प्रतिशत मध्य प्रदेश में है। अतः उत्पादन तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रदेश, पूरे देश में पहले स्थान पर है। वर्ष २०११ में प्रदेश की अपनी जैविक कृषि नीति बनाई गई है। जैविक खेती विकास के संबंध में निर्णय लेने के जैविक खेती विकास परिषद का गठन प्रदेश के मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में बनाया गया है। किसानों को जैविक कृषि पद्धति अपनाने के लिये कई सुविधाएं प्रदेश में दी जा रहीं हैं तथा उत्पादों के लाभकारी विपणन के लिये जैविक उत्पाद प्रमाणीकरण की व्यवस्था है, जिसमें पंजीयन कराने के लिये भी निर्धारित शुल्क में राज्य सरकार द्वारा छूट व अनुदान दिये जाते हैं।

योजना में खरीफ २०१६ में धान एवं रबी २०१६ -१७ में गेहूँ की न्यूनतम समर्थन मूल्य पर प्राथमिक साख सहकारी समितियों के माध्यम से ई – उपार्जित मात्रा पर रु २०० /- प्रति क्विंटन का प्रोत्साहन राशि लाभान्वित पात्र किसान के बैंक खाते में जमा कराई जाये ।

प्रदेश में रबी २०१७-१८ में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जित कराने वाले किसानों को रू.२६५ प्रति क्विंटल प्रोत्साहन राशि उपार्जित कराने वाले किसानों के बैंक खातों में जमा किए जाने का निर्णय लिया गया । पंजीकृत किसान द्वारा बोनी एवं उत्पादकता के आधार पर उत्पादन की पात्रता की सीमा तक दिनांक १५ मार्च, २०१८ से २६ मई २०१८ के मध्य कृषि उपज मंडी में विक्रय पर भी रु. २६५ प्रति क्विंटल की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाए । कृषि उत्पाद मंडी में न्यूनतम समर्थन मूल्य से

Scanned with OKEN Scanner

नीचे बेचा गया हो अथवा न्यूनतम समर्थन मूल्य से ऊपर बेचा गया हो, दोनों स्थिति में मुख्यमंत्री कृषक समृद्धि योजना का लाभ पंजीकृत किसान को देय होगा।

प्रदेश में रबी २०१७-२०१८ में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर चना, मसूर एवं सरसों उपार्जित कराने वाले किसानों को रु. १००/- प्रति क्विंटल प्रोत्साहन राशि उपार्जन कराने वाले पात्र किसानों के बैंक खातों में जमा किए जाने का निर्णय लिया गया। पंजीकृत किसान द्वारा बोनी एवं उत्पादकता के आधार पर उत्पादन की पात्रता की सीमा तक दिनांक १० अप्रैल, २०१८ से लेकर न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी की अंतिम नियत तिथि तक कृषि उपज मंडी में विक्रय पर भी रु. १००/- प्रति क्विंटल की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाए। कृषि उत्पाद मंडी में न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे बेचा गया हो अथवा न्यूनतम समर्थन मूल्य से ऊपर बेचा गया हो, दोनों स्थिति में मुख्यमंत्री कृषक समृद्धि योजना का लाभ पंजीकृत किसान को देय होगा।

१.१.७ जैविक खाद निर्माण की विधियाँ

खेतों में रसायन ड़ालने से ये जैविक व्यवस्था नष्ट होने को है तथा भूमि और जल प्रदूषण बढ़ रहा है। खेतों में हमें उवलब्ध जैविक साधनों की मदद से खाद, कीटनाशक दवाईयाँ, चूहा नियन्त्रण हेतु दवा बगैरह बनाकर उनका उपयोग करना होगा। इन तरीकों के उपयोग से हमें पैदावार भी अधिक मिलेगी एवं आनाज, फल, सब्जियाँ भी विषमुक्त एवं उत्तम होंगी। प्रकृति की सूक्ष्म जीवाणुओं एवं जीवों का तन्त्र पुनः हमारी खेती में सहयोगी कार्य कर सकेगा। अब हम खेती में इन सूक्ष्म जीवाणुओं का सहयोग लेकर खाद बनाने एवं तत्वों की पूर्ति हेतु मदद लेंगे। खेतों में रसायनों से ये सूक्ष्म जीव क्षतिग्रस्त हुए हैं, अतः प्रत्येक फसल हमें अपने कल्चर का उपयोग करना पड़ेगा। जिससे फसलों को पोषण तत्व उपलब्ध हो सके।

खाद बनाने के लिए कुछ तरीके नीचे दिये जा रहे हैं, इन विधियों से खाद बनाकर खेतों में ड़ालें। इस खाद से मिट्टी की रचना में सुधार होगा, सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या भी बढ़ेगी एवं हवा का संचार बढ़ेगा, पानी सोखने एवं धारण करने की क्षमता में भी वृद्धि होगी और फसल का उत्पादन भी बढेगा। फसलों एवं झाड़ पेड़ों के अवशेषों में वे सभी तत्व होते हैं। जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है।

Scanned with OKEN Scanner

नाड़ेप विधि

नाडेप का आकार लंबाई 12 फीट, चौड़ाई 5 फीट, ऊंचाई 10 फीट आकार का गड्ढा कर ले। भरने हेतु सामग्री – 75% वनस्पतिके सूखे अवशेष, 20% हरी घास, गाजर घास, पुआल, 5% गोबर, 2000 लीटर पानी। सभी प्रकार का कचरा छोटे-छोटे टुकड़ों में हो, गोबर को पानी से घोलकर कचरे को खूब भिगो दें। फावड़े से मिलाकर गड्ड-मड्ड कर दें।

विधि नंबर-1 नाडेप में कचरा चार अंगुल भरें, इस पर मिट्टी दो अंकुल डालें मिट्टी को पानी से भिगो दें। जब पुरा नाडेप भर जाए तो उसे ढालू बनाकर इस पर चार अंगुल मोटी मिट्टी से ढांप दें।

विधि नंबर-2 कचरे के ऊपर 12 से 15 किलो रॉक फास्फेट की परत बिछाकर पानी से भिगो दें इसके ऊपर एक अंगुल मोटी मिट्टी बिछाकर पानी डालें। गड्ढा पूरा भर जाने पर चार अंगुल मोटी मिट्टी से ढांप दें।

विधि नंबर-3 कचरे की परत के ऊपर दो अंगुल मोटी नीम की पत्ती हर परत पर बिछाए। इस खाद नाडेप कंपोस्ट में 7 60 दिन बाद सब्बल से डेढ़-डेढ़ फुट पर छेद कर 15 टीन पानी में 5 पैकेट पी०एस०बी० एवं 5 पैकेट एजोटोबेक्टर कल्चर को घोलकर इन छेदों मे भर दें इन छेदों को मिट्टी से बंद कर दें।

मटका खाद

गौमूत्र 10 लीटर, गोबर 10 किलो, गुड़ 500 ग्राम, बेसन-500 ग्राम सभी को मिलाकर मटके में भरकर 10 दिन सडाएं फिर 200 लीटर पानी में घोलकर गीली जमीन पर कतारों के बीच छिड़क दें 15 दिन बाद पुनः इसका छिड़काव करें।

चावल में कीट के प्रबंधन के लिए नया जैविक कीटनाशक नुस्खा

चावल मनुष्य के आहार का एक प्रमुख भाग है और इसे क्षेत्र के बड़े हिस्से में उगाया जाता है तथा तनाछेदक, पत्ती मोड़ने वाला, व्होर्ल मेग्गात तथा बीपीएच जैसे कीटों के अकार्बनिक कीटनाशकों द्वारा प्रबंध से मनुष्य तथा पशुओं को स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याएं उत्पन्न होती हैं और ठीक होने के बाद भी उनका असर शेष रहता है। दूसरी ओर जैविक रूप से उत्पन्न चावल के लिए भरपूर संभावनाएं

Scanned with OKEN Scanner

तथा मांग है इस समस्या को ध्यान में रखते हुए अनुप्रयोग करने वाले किसान ने प्राकृतिक रूप से उपलब्ध सामग्री की मदद से एक नया जैविक कीटनाशक नुस्खा तैयार किया। नुस्खे के भाग इस प्रकार हैं

क्रम सं०	सामग्री	मात्रा
1	नीम	3 किलो
2	केलोट्रोपिस की पत्ती	2 किलो
3	कस्टर्ड की पत्ती	2 किलो
4	हाइप्टिस की पत्ती	2 किलो
5	धतूरे की पत्ती	2 किलो
6	गौमूत्र	15 लीटर

तैयार करने की विधि

एक ढक्कन लगे हुए मिट्टी के बर्तन में सभी भागों को मिलाएं और फर्मेंटेशन के लिए 5 से 7 दिनों के लिए रख दें। उसके बाद भागों को अच्छी तरह मिलाएं और सत्व को छानकर इकट्ठा करें। सत्व का 5 लीटर प्रति 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से उपयोग करें।

१.१.८ जैविक खेती से होने वाले लाभ

१.१.८.१ मिट्टी की दृष्टि से

- जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।
- भूमि की जलधारण क्षमता बढ़ती है।
- भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

Scanned with OKEN Scanner

१.१.८.२ कृषकों की दृष्टि से

- भूमि उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है।
- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।

१.१.८.३ पर्यावरण की दृष्टि से

- भूमि के जलस्तर में वृद्धि होती है।
- मिट्टी खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।
- कचरे का उपयोग खाद बनाने में होने से बीमारियों में कमी आती है।
- फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि।
- अंतरराष्ट्रीय बाजार में की स्पर्धा में जैविक उत्पाद की गुणवत्ता का खरा उतरना।

१.१.९ जैविक खेती के घटक

१.१.९.१ फसल और मृदा प्रबंधन

इस प्रणाली का उद्देश्य मिट्टी के उपजाऊ पन को दीर्घकालीन आधार पर बनाए रखने के लिए उसमें जैविक पदार्थों के स्तर में वृद्धि करना। इस घटक के तहत शासन की विभिन्न किस्मों में से चयन, समय पर बुवाई करने, फसलों की अदला- बदली करके बुवाई करने हरी खाद के उपयोग और लेग्यूम जैसी फसलों को साथ बोने पर जोर दिया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

१.१.९.२ पौष्टिक तत्वों का प्रबंधन

इसमें जैविक पदार्थों जैसे पशुओं की के गोबर की खाद के उपयोग, कंपोस्ट, वर्मी कंपोस्ट, फसल अपशिष्ट के उपयोग, हरी खाद और जमीन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए कवर क्रॉप को उगाया जाता है। पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण के महत्व को ध्यान में रखते हुए फसलों की अदला-बदली करके बुवाई और जैव उर्वरकों को भी शामिल किया जाता है।

१.१.९.३ पादप संरक्षण

कीड़े मकोड़े, बीमारी फैलाने वाले पैथोजीनों और अन्य महामारियों को नियंत्रित करने के लिए मुख्य रूप से फसलों की अदला- बदली करके बुवाई, प्राकृतिक एक नियंत्रकों, स्थानीय किस्मों, विविधता और जमीन की जोत का सहारा लिया जाता है। इसके बाद वानस्पतिक, तापीय और रासायनिक विकल्पों का इस्तेमाल सीमित स्थितियों में अंतिम उपाय के तौर पर किया जाता है।

१.१.९.४ पशुधन प्रबंधन

मवेशियों को पालने के लिए उनके उद् विकास संबंधी अनुकूलन, व्यवहार संबंधी आवश्यकताओं और उनके कल्याण संबंधी मुद्दों(जैसे पोषाहार, आश्रय, प्रजनन आदि) पर पूरा ध्यान दिया जाता है।

१.१.९.५ मृदा और जल संरक्षण

बारिश के फालतू पानी से जमीन का कटाव होता है। इसे कंटूर खेती, कंटूर बांधों के निर्माण की खेती, पानी के बहाव के मार्ग में घास उगाने जैसे उपायों से रोका जा सकता है। शुष्क इलाकों में क्यारियों के बीच बारिश के पानी को जमा करके, ब्राड बेड और फरो प्रणाली, भूखंडों के बीच वर्षा जल संचय और स्कूपिंग जैसे उपाय अपनाकर पानी का संरक्षण किया जा सकता है।

१.२ समस्या का प्रादुर्भाव

भारत देश की दिन दुर्दशा को देखते हुए तथा वृक्षों का हनन और मृदा का दोहन जो देश के लिए बहुत बड़ी समस्या बन कर खड़ी हो गई है। भारत में लोग इतनी तरह के कारनामे करते गए तो एक दिन

Scanned with OKEN Scanner

ऐसा आएगा कि लोगों को खाने के लिए लाले पड़ जाएंगे लोग अपनी खेती में अधिकाधिक उर्वरकों का प्रयोग कर रहा है, जो सभी जीव धारियों को तो नुकसान देह है साथ ही मिट्टी को भी प्रभावित करता है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का प्रादुर्भाव हुआ है तथा इसका गहन अध्ययन बहुत ही जरूरी है। हम जैविक कृषि के बारे में लोगों को जानकारी देना चाहते हैं कि लोग अज्ञानता व्यवस्था की जंजीरों में जकड़े हुए वह आर्थिक अनोत पादन तथा हरित क्रांति के नाम पर रसायनिक खादों तथा खरपतवारनाशी कीटनाशकों ने जैविक कृषि पर ग्रहण लगा दिया है तथा संपूर्ण कृषि से पर्यावरण प्रभावित हो चुका है।

किसी भी कार की दिशा में बढ़ाया गया प्रथम कदम सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है क्योंकि प्रथम कदम मार्ग को प्रशस्त करता है, समय तथा हमारा जीवन हम से अपेक्षा करता है कि हम स्वयं का ध्यान रखें तथा ध्यान हम सभी रख सकते हैं। जब हमारा आहार शुद्ध हो एवं शुद्ध आहार के लिए कृषि पर ध्यान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

१.३ समस्या का कथन

शोधकर्ता ने प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में समस्या को निम्न शीर्षक में शब्द बंद किया है "प्रशिक्षु प्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन"

१.४ समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

१.४.१ जैविक कृषि

जैविक खेती कृषि कि वह विधि है जो संश्लेषित और वर्गों एवं संश्लेषित कीटनाशकों के प्रयोग या न्यूनतम प्रयोग पर आधारित है तथा जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए फसल चक्र हरी खाद कंपोस्ट आज का प्रयोग करती है |

१.४.२ छात्राध्यपकों

" अध्यापकों का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला विद्यार्थी"

Scanned with OKEN Scanner

राष्ट्रीय विकास के लिए मानवीय संसाधन को उपयोगी बनाने में अध्यापकों की अहम भूमिका है, कक्षागत क्रियाकलापों के लिए अध्यापक अनेक शिक्षण युक्ति एवं विधियों का प्रयोग करते हैं। वर्तमान में गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराने का अनेक बल दिया जा रहा है शिक्षण में सृजनात्मक अभिवृत्ति छात्रों की रचनात्मकता कों पोषित करती जिससे वे उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का समुचित प्रयोग करके संतोषजनक परिणामों को सुनिश्चित किया जा सकता है।

यशपाल समिति (१९९२) ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्राध्यापकों के स्वतंत्र चिन्तन व स्व अधिगम के विकास पर मुख्य ज़ोर स्तर के शिक्षण संस्थानों को स्थापित करने में अध्यापकों की शिक्षण कौशल सक्षमता एक महत्त्वपूर्ण कारक है।

१.४.३ जागरूकता

जागरूकता यानी सजग जीवन,चैतन्य जीवन अर्थात चिंतन पर आधारित जीवन, मंयन से निकला जीवन। जागरूकता यानी बाहरी संसार भीतरी संसार की संपूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी। प्रस्तुत लघु शोध कार्य में जागरूकता से तात्पर्य प्रशिक्षु प्राध्यापकों को जैविक कृषि की जानकारी से है।

१.४.४ अध्ययन

किसी विषय के सब अंगों या गूढ़ तत्वों का ज्ञान करने के लिए उसे समझने या पढ़ने की क्रिया अध्ययन कहलाती है।

रोजर्स के अनुसार -"यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ अनुभव के रूपांतरण से ज्ञान का सृजन होता है अनुभवों को आत्मसात करने और उनके रूपांतरण के परिणाम स्वरूप ज्ञान पैदा होता है।"

१.४.५ बाँदा जनपद

भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है, जिले का क्षेत्रफल 4,408 वर्ग किलोमीटर है तथा बाँदा कस्बा जिले का मुख्यालय है। यह जिला चित्रकूट मंडल के अंतर्गत आता है। बाँदा की

Scanned with OKEN Scanner

जनसंख्या-2,75,755 है। यहाँ की साक्षरता 66.67% है यहाँ 4 तहसील हैं, बाँदा, नरैनी, बबेरू, अतर्रा। यह जिला 24°32'N 80°04'E, 24.53°N 80.07°E अक्षांश देशान्तर है।

जिले के उत्तर में फतेहपुर जिला, पूर्व में चित्रकूट जिला, पश्चिम में हमीरपुर व महोबा जिला तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश राज्य के छतरपुर तथा सतना जिला स्थित है। जिले में 8 प्रखण्ड हैं। बड़ोखर, पैलानी, जसपुरा, तिंदवारी, महुआ, बबेरू, बिसंडा तथा कमासिन।

१.५ अध्ययन के उद्देश्य

किसी अनुसंधान कार्य का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके समस्याओं का समाधान खोजना होता है परंतु अनुसंधान की समस्याएँ किसी व्यक्ति विशेष के समक्ष दिन प्रतिदिन आने वाली समस्याएँ अभी तक अज्ञात सत्यों, सिद्धांतों या उपयोगों को सामने लाती है वस्तुत: प्रत्येक अनुसंधान कार्य की अपनी कोई विशिष्ट समस्या एवं अपना कोई एक स्पष्ट उद्देश्य अवश्य होता है, कार्यपरक की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य अग्रांकित है –

- जैविक कृषि के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाला कच्चामाल आदि का पुन:प्रयोग या नूतनीकरण का अध्ययन करना ।
- खेती प्रणाली से निर्माण होने वाले सभी प्रकार के प्रदूषण कम होंगे ।
- पानी का प्रयोग व जलचरों का संवर्धन करना, भूमि व जल का संरक्षण करना।
- सभी पालतू प्राणियों का नैसर्गिक व्यवहार कायम रहेगा, ऐसी परिस्थिति का निर्माण करना।
- आवश्यक मात्रा में उच्च पौष्टिक दर्जा होने वाले खाद्यान्न उत्पन्न करना ।
- प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।

१.६ अध्ययन के चर

शोध अध्ययन मे छात्राध्यापकों के बुद्धि स्वतंत्र चर, भूमिका, प्रतिबद्धता, आश्रित चर तथा लिंग विद्यालयी के प्रशासन एवं संकायों को पृष्ठभौमिक चर के रूप मे लिया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

१.७ शोध परिकल्पना

छात्र- छात्राओं के जैविक कृषि जागरूकता प्राप्तांकों के मध्यमान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

छात्र छात्राओं की अपेक्षा जैविक कृषि के प्रति अधिक जागरूक हैं।

१.८ अध्ययन का परिसीमांकन

१. शोधकर्ता द्वारा इस लघु-शोध कार्य में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है।

२. इस अध्ययन में केवल प्रशिक्षु प्राध्यापकों को ही लिया गया है।

३. इस अनुसंधान कार्य में २००विद्यार्थियों को लिया गया है।

४. इसमें केवल महाविद्यालय विद्यार्थियों को लिया गया है।

५. यह अध्ययन केवल बाँदा जनपद के विद्यार्थियों पर ही किया गया है।

१.९ अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

प्रस्तुत लघु शोध से जैविक कृषि की चुनौतियों से निपटने के लिए जैविक खाद का इस्तेमाल आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है ऐसी समस्या उजागर होंगी वह अपनी योजना तथा नई जानकारियों को भी समझेंगे। मानव जीवन में आई हुई बिसंगतियां तथा कृतियां और खान -पान में परिवर्तनों से आज न जाने कितने रोग एवं व्याधियों उत्पन्न हो रहे हैं इनसे कैसे निपटा जाए उसके लिए हम सबको खान-पान में सुधार करना पड़ेगा तथा पूर्ण जैविक खाद्य पदार्थों का ही दैनिक जीवन में उपयोग करना चाहिए जैविक कृषि से भूमि संरक्षण, वातावरण संरक्षण और उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं| प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से प्रशिक्षित छात्राध्यापक स्वयं जागरूक होंगे तथा साथ ही साथ सभी को जागरूक करेंगे इस प्रकार प्रस्तुत लघु शोध प्रशिक्षित अध्यापकों के लिए ही निश्चित एवं उपयोगी सिद्ध होगा।प्रस्तुत लघु शोध आज के परिवेश को देखते हुए कि हमने इसका अध्ययन करना सार्थक समझा है जिससे लोगों जागरूक करें तथा वह इसका अध्ययन कर निश्चित ही सार्थक सिद्ध होंगे।

Scanned with OKEN Scanner

द्वितीय अध्याय

संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

Scanned with OKEN Scanner

द्वितीय अध्याय सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण

२.१ प्रस्तावना

संबंधित साहित्य का अध्ययन प्रत्येक वैज्ञानिक शोध प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। बिना पुनरावलोकन किए शोधकर्ता दिशाहीन होता है, इसके अभाव में हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। जब तक हमें यह ज्ञात न हो कि शोध के क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस प्रकार से कार्य किया गया है तथा उसके क्या परिणाम निकले हैं। तब तक हम न तो केवल समस्या का निर्धारण कर सकते हैं और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को संपन्न कर सकते हैं।

संबंधित साहित्य से आशय उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित लघु शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों का समावेश होता है, जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। वस्तुतः संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अधूरा है।

२.२ जैविक कृषि के संदर्भ में हुए कतिपय शोध

भूपेंद्र कुमार जांगड़ , (1 अप्रैल 2018) द्वारा अध्ययन किया गया ''Human and Agriculture Resource in Neam Ka Thana Teh. Sikar a Analytic Research'' अध्ययन क्षेत्र के परिवर्तनशील कृषि प्रारूप, मानवीय संसाधन, धरातलीय स्वरूप, जलवायु की दशायेँ एवं पशुधन से संबंधित समस्त पक्षों का अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है की नीम का थाना एक कृषि प्रधान तहसील है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तहसील में कृषि विकास पर तेजी से ध्यान दिया गया और कृषि विकास हुआ पशुधन विकास को प्रोत्साहन प्रदान करने हैं अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया लेकिन मरुस्थलीय व पर्वत क्षेत्र की अधिकता के कारण पर्याप्त विकास नहीं हो सका। सन 1966-67 में हरित क्रांति के आगमन से कृषि विकास में तीव्रता आई लेकिन तहसील में कृषि कार्य, जलवायु, मृदा की

Scanned with OKEN Scanner

प्रकृति एवं भू-जल संसाधन की उपलब्धता पर निर्भर है। 20वीं सदी के उपरांत जब यह स्पष्ट हो गया कि तहसील में भू-जल संसाधनों के अत्यधिक दोहन से सिंचाई की समस्या उत्पन्न होगी। अतः तहसील की वर्तमान जलवायुगत परिस्थितियों, धरातल की प्रकृति, मृदा का स्वरूप, वर्षा की मात्रा व भू-जल संसाधन की उपलब्धता के अनुरूप ही कृषि फसलों के प्रारूप में परिवर्तन कर यहाँ की कृषि व्यवस्था को विकसित करने पर बल देना चाहिए। तहसील में कृषि के भविष्य को देखते हुए कृषि वानिकी व बागवानी कृषि व शुष्क फसलों की असीम संभावनाएं हैं।

राकेश चंद्र 1 दिसंबर 2014 द्वारा किया गया शोध अध्ययन उत्तराखंड के कृषि विकास एवं सम्बद्ध गतिविधियों के विकास में कृषि विविधीकरण परियोजना की भूमिका से संदर्भित है। कृषि क्षेत्र के विकास को एक नया आयाम दे पाने में परियोजना का दृष्टिकोण कितना सार्थक है इस संदर्भ में शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि उत्तराखंड के केवल 5 जनपदों मे ही यह योजना क्रियान्वित की गई। शेष जनपदों में कृषि क्षेत्र का विकास योजना के अंतर्गत शामिल नहीं किया गया। यह केवल प्रयोगात्मक तौर पर आधारित रहा इससे बहुत कम कृषक/कृषक समूह लाभ की परिधि मे आये, अच्छा होता यह परियोजना, वृहद परियोजना के रूप में उत्तराखंड के संपूर्ण जनपदों में साकार होती। कृषि शेष भारत की तरह उत्तराखंड में भी अजीवका का मुख्य साधन है। प्रमुख साधन होते हुए भी कृषि विकास पर ध्यान न दिदीया जाना एक चिंता का विषय रहा है मात्र गोष्ठियों व चर्चा परिचर्चा के माध्यम से कोई ठोस हल नहीं निकल सकता है अतः है इसके लिए कृषि विशेषज्ञों की राय जाना तथा परियोजना व सरकारी प्रयासों को कार्यरूप में दिया जाना समय की मांग है।

२.३ अध्ययन से संबंधित लेख समाचार पत्र पुस्तकें इत्यादि

प्रस्तुत लघु शोध में जैविक कृषि से संबंधित अनेक समाचार पत्रों पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में लेख उल्लेखित हैं जिन्हें अध्ययन कर लोगों में जागरूकता उत्पन्न होती है तथा वह जैविक कृषि की चुनौतियों से निपटने के लिए जैविक खादों का इस्तेमाल आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

Scanned with OKEN Scanner

फूलों की खेती से महक की जिंदगी दृश्य एक कर्वी ब्लाक के डिलौरा गांव निवासी जगन्नाथ कुशवाहा ने एक साल पहले परंपरागत गेहूं-धान से इतर गुलाबों की खेती शुरू की कभी फसल उगाने के लिए परेशानी में फंसे रहते थे लेकिन अब ४से ५ सौ प्रति दिन की आमदनी करते हैं उनसे प्रेरणा लेकर कई किसान इस दिशा में आगे बढ़े हैं।

दृश्य दो रामबाग के रामनरेश गेंदा के फूलों की खेती करीब डेढ़ साल से कर रहे हैं। खाद बीज के लिए धनराशि को लेकर दिक्कत में फंसे रहने वाले रामनरेश अब हर दिन २ से ५ सौ तक की कमाई कर लेते हैं उनकी आर्थिक हालात सुधर गई है।

रासायनिक खादों से बचें, जैविक खाद से बढ़ाएं आय

विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस पर कृषि विश्वविद्यालय, बाँदा में गोष्ठी का आयोजन किया गया इस मौके पर विश्वविद्यालय के निदेशक डॉक्टर एनके बाजपेई ने कहा कि किसान खेती में रसायनों का अंधाधुन्ध प्रयोग से बचें। इसके बजाय जैविक खेती कर खेती की लागत कम करें और आय बढ़ाएं।

सामुदायिक खेती की ओर शहरी भारत

हम सभी रसायन मुक्त पौष्टिक खाद्य सामग्री का सेवन करना चाहते हैं लेकिन हालात ऐसे बन चुके हैं की किसी भी तरह के आहार की गारंटी नहीं कि वह सेहत के लिए उपयुक्त ही है। तेजी से बढ़ती जीवनशैली संबंधी बीमारियां इसका प्रमाण है। अब शहरी भारत ऑर्गेनिक फार्मिंग के जरिए वापस धरती से जुड़ने की ओर अग्रसर है। अंशु सिंह बता रही हैं कि हर वर्ग के पेशेवर खेतों या फार्म हाउस में कर रहे हैं नए प्रयोग ताकि रह सकें चुस्त-दुरुस्त और तंदुरुस्त...........

मानव जीवन को जैविक खेती जरूरी

दैनिक जागरण के संकल्प अभियान के माध्यम से रासायनिक खादों के बढ़ते प्रयोग से बंजर होती जा रही धरती को बचाने का संकल्प लिया है, मानव जीवन को बचाने के लिए जैविक खेती जरूरी हो गई है। खेती की लागत कम करने को वह खुद गोबर खाद का प्रयोग करेंगे और इसके लिए अन्य किसानों को भी प्रेरित करेंगे पशुपालकों को गैर उपयोगी गोवंश का नर से सुधार कर उन्हें कैसे उपयोगी बनाया जा सकता है, इसको कर्वी के प्रगतिशील किसान योगेश जैन ने बताया है।

Scanned with OKEN Scanner

बुंदेलखंड में विकास का आधार बनेंगे असेनिया फेटिडा व जय गोपाल केंचुए

बुंदेलखंड की खेती में दिनों दिन बढ़ रही पानी की समस्या असेनिया फेटिडा व जय गोपाल नाम के केंचुए दूर करेंगे। खास किस्म के इनके केंचुओं को बढ़ाने के लिए कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा के किसानों को जैविक खाद तैयार करने का प्रशिक्षण दे रहा है। जनपद के करीब ७००० किसान जैविक खाद का प्रयोग कर रहे हैं।

खेती की ओर बढ़ा युवाओं का रुझान

खेती फायदेमंद तो दूसरे की नौकरी करें क्यों, बोले मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती।

जनपद के ८० फ़ीसदी लोग खेती से जुड़े हैं, शायद यही वजह है कि भले ही कभी सूखा कभी बाढ़े तो कभी अन्ना मवेशियों से परेशान किसान अपने पैतृक काम खेती को नहीं छोड़ना चाहते हैं। इतना ही नहीं अब तो जनपद के पढ़े-लिखे युवा भी खेती को ही अपना रोजगार बना रहे हैं, डिग्री का प्रयोग उन्नत खेती के लिए कर रहे हैं उनका कहना है कि किसी की नौकरी से अच्छी अपनी खेती बाड़ी यदि मेहनत और लगन से की जाए तो परिवार का पेट पालना कोई कठिन नहीं है।

२.४ समीक्षात्मक निष्कर्ष

जैविक कृषि के संदर्भ में हुये विभिन्न शोधों के अध्ययन से यह पता चलता है कि शोध किसी भी समस्या को समाधान करने के लिए किया जाता है। शोध किसी विशेष क्षेत्र तथा विषय के संदर्भ में किए गए हैं जो सभी क्षेत्रों के लिए लाभकारी होते हैं तथा कुछ जानकारी प्राप्त करते हैं उपरोक्त साहित्यों के अध्ययन से यह पता चलता है कि किसी विशेष संदर्भ में वर्तमान की परिस्थितियों से जूझ रहे जैविक कृषकों चुनौतियों से निपटने के लिए विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारियाँ देकर जागरूक करना है तथा वह अपनी समस्याओं से उभरकर सफल कृषक सिद्ध होंगे।

जब कोई समस्या उत्पन्न होती है तब उस समस्या के निदान के लिए भरपूत प्रयास किए जाते हैं, उनका नीवारण तथा सार्थक प्रयास किया जाता है। उपरोक्त शोध जैविक कृषि के संदर्भ मे किए गए हैं जो सभी के लिए सहायक सिद्ध हैं।

Scanned with OKEN Scanner

तृतीय अध्याय

अध्ययन अभिकल्प

Scanned with OKEN Scanner

तृतीय अध्याय अध्ययन अभिकल्प

३.१ शोध विधि

किसी भी लघु शोध कार्य में सत्यान्वेषण के लिए शोध विधि शोध क्रिया को परिचालित करने का ढंग होती है मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का विकास किया है। जिनका प्रयोग समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य " प्रशिक्षु प्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन" करना है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की समस्या को देखते हुए शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

३.२ अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में विद्यार्थी समष्टि को समाहित किया गया है, वर्तमान लघु शोध समष्टि के अंतर्गत B.Ed., M.Ed., D.El.Ed., B.El.Ed.के छात्र-छात्राएं समाविष्ट है जो उपरोक्त कक्षाओं में अध्ययनरत हैं समष्टि में बाँदा जनपद के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को चुना गया है।

३.३ प्रतिदर्श चयन

यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित महाविद्यालयों में से लक्षित प्रतिदर्श चयन आकाश मिक विधि द्वारा किया गया अर्थात परीक्षण प्रशासन के समय उपलब्ध कुछ विद्यार्थियों को प्रतिदर्श में सम्मिलित कर लिया गया। शेष इकाइयों को अध्ययन में सम्मिलित न करने का कारण विद्यार्थियों की महाविद्यालय में अनुपस्थिति अथवा और असहभागिता तथा असहयोग था।

विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं को अध्ययन में इस कारण सम्मिलित किया गया क्योंकि जीवन की यह कक्षाएं अति महत्वपूर्ण है इसी स्तर पर प्रशिक्षु प्राध्यापक स्वतंत्र रूप से जीवन की परिस्थितियों तथा स्वास्थ्य के प्रति सचेष्ट होकर दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं के बारे में भली-भांति परिचित हो जाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

तालिका ३.३.१ प्रतिदर्श चयन का आकार तथा उसका विभाजन

कक्षा / श्रेणी	B.Ed.	M.Ed.	D.El.Ed.	B.El.Ed.	योग
छात्र	१७	१८	३५	१०	८०
छात्राएं	५	२०	८१	१४	१२०
योग	२२	३८	११६	२४	२००

३.४ न्यादर्श चयन विधि

लघु शोध के संदर्भ में प्रतिदर्श चयन के निमित्त अर्द्ध संभाव्य प्रतिदर्श चयन प्रविधि को ग्रहण किया तथा अंतिम रूप से प्रतिदर्श चयन के संदर्भ में यादृच्छिक विधि का अनुसरण किया गया बाँदा जनपद के कुछ महाविद्यालयों का चयन उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा किया गया।

तालिका ३.४.१ न्यादर्श चयन में चयनित महाविद्यालय तथा छात्र-छात्राएं

महाविद्यालय / श्रेणी	अतर्रा पी0 जी0 कॉलेज अतर्रा	चंद्रशेखर पांडे महाविद्यालय	मन्नूलाल संस्कृत महाविद्यालय	मुनीम सिंह भारतीय एजुकेशन सेंटर	योग
छात्र	३५	१०	१०	२५	८०
छात्राएं	२५	१४	२९	५२	१२०
योग	६०	२४	३९	७७	२००

Scanned with OKEN Scanner

३.५ शोध उपकरण

किसी भी शोध समस्या की परिकल्पना के परीक्षण के लिए आवश्यक एवं तर्कसंगत आंकड़ों की जरूरत होती है। इन आंकड़ों के संकलन के लिए जिन साधनों का उपयोग किया जाता है, उन्हें शोध उपकरण कहा जाता है। अनुसंधान के उपकरण ऐसे होने चाहिए जो वांछित उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक तथा संबंधित आंकड़ों के लिए उपयुक्त हो। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शोध उपकरण के रूप 'प्रश्नावली' का प्रयोग किया गया। क्योंकि यह विधि प्रस्तुत समस्या के अनुकूल एवं शोधकर्ता के लिए सुविधाजनक रही।

३.६ प्रश्नावली का निर्माण

प्रश्नावली वह क्रमबद्ध तालिका है जो विषय वस्तु के संदर्भ में वांछित सूचनाएं अर्जित करने में योगदान देती है।

यह प्रश्नावली डॉ० राजीव अग्रवाल जी के निर्देशन में एवं शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित की गई है।यह प्रश्नावली जैविक कृषि के प्रति जागरूकता के लिए है तथा इसके द्वारा विद्यार्थियों से जानकारी प्राप्त करने के लिए कि उनमें जैविक कृषि के प्रति कितनी समझ है। इस प्रश्नावली को चार खण्डों में विभाजित किया गया है, जिसमें कुल 35 प्रश्न दिए गए हैं।

खण्ड (अ) में उपयोगिता तथा सामान्य जानकारी के १३ प्रश्न रखें गए हैं तथा खण्ड (ब) में जैविक कृषि के प्रति सहिष्णुता वाले १० प्रश्न रखें गए हैं और खण्ड (स) में कृषि कैसे की जाती है तथा क्षेत्रफल के बारे में जानकारी के ५ प्रश्न रखें गए हैं। अंतिम खण्ड (द) में वैदिक तथा आधुनिक खेती के बारे में सामान्य जानकारी के प्रश्न ७ रखें गए हैं लेकिन अंतिम प्रश्न पर सुझाव मांगे गए हैं।

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में जैविक जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण किया गया तथा सभी को एक अंक प्रदान किया गया। वहीं छात्र-छात्राओं में जैविक जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन के लिए सही विकल्प के लिए एक अंक कुछ के अलग अलग प्रश्नों में अलग-अलग तरह फलांकन भी किया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

३.७ परीक्षण का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन शोधार्थी द्वारा किया गया सर्वप्रथम चयनित महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं विभागाध्यक्षों से आज्ञा प्राप्त की गई तत्पश्चात परीक्षण प्रशासित करने से पूर्व चयनित कक्षाओं के विद्यार्थियों से शोधार्थी द्वारा सौहार्द संबंध स्थापित किए गए एवं उनको लघु शोध उद्देश्यों से परिचित कराया गया।

संबंधस्थापन के पश्चात विद्यार्थियों को सभी प्रश्न पुस्तिकाओं को क्रमश: एक-एक करके शोधार्थी द्वारा वितरित किया गया क्योंकि सभी परीक्षण सो निर्देशित तथा सामूहिक रूप से प्रशासन योग्य थे अत: शोधार्थी ने के माध्यम से विद्यार्थियों के समक्ष स्पष्ट किया तथा निर्देशानुसार ही सभी परीक्षणों को पूर्ण रूप से भरने का अनुरोध किया।

विद्यार्थियों द्वारा समस्त उत्तर पुस्तिकाएं पूर्ण करने के पश्चात उन्हें एकत्र कर लिया गया तथा उनके सहयोग के लिए धन्यवाद प्रेषित किया गया।

३.८ परीक्षण का फलांकन

जैविक जागरूकता फलांकन विद्यार्थियों में जैविक जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण किया गया है। फलांकन सारिणी में सभी खण्डों तथा उनके सभी विकल्पों को 1 अंक या सही का चिह्न प्रदान किया गया, जिसमें प्रत्येक प्रश्न का छात्र-छात्राओं का प्रश्नवार एक साथ गणना किया गया है और सभी प्रश्नों का अलग-अलग औसत प्रतिशत भी निकाला गया है। जो रेखा चित्रों के माध्यम से प्रत्येक प्रश्न की अलग-अलग जानकारी प्राप्त की गई।

जैविक जागरूकता फलांकन जब छात्र-छात्राओं में जैविक जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है तब फलांकन सारिणी में प्रश्न १(स), ८(स), ९(द), १०(अ), ११(अ), १२(ब), १३(ब), १४(A), १५(D), १६(A), १७(A), १८(A), १९(D), २०(A), २१(A), २२(A), २३(A), २४(Y), २७(Y), २८(Y), २९(F), ३०(T), ३१(T), ३२(T), ३३(T), ३४(T) को १अंक दिया गया है तथा प्रश्न २ के चारों विकल्पों को (अ) ४ (ब) ३(स) २ (द) १ अंक प्रदान किया गया है और प्रश्न ६ के सही

Scanned with OKEN Scanner

मानक विचलन

प्राप्त अंकों में विचलनशीलता का अध्ययन करने हेतु मानक विचलन ज्ञात गया।

$$S.D. = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N} - \left(\frac{\sum d}{N}\right)^2}$$

जहाँ $d = X - A$

$X =$ पद $A =$ कल्पित माध्य

पाई चित्र

प्रत्येक प्रश्न में सभी विकल्पों के आधार पर प्रश्नवार स्थिति के अध्ययन हेतु पाई चित्र की रचना की गई।

दण्ड आरेख

महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति के अध्ययन हेतु दण्ड आरेख की रचना की गई, इसके द्वारा एकल व सामूहिक सांख्यिकीय आंकड़ों के मानों को आयताकार दण्डों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। जहां प्रत्येक दण्ड की लंबाई उसके द्वारा प्रदर्शित किए गए मान के अनुपात में रखी जाती है।

टी-अनुपात

दो समूहों में निहित अंतर की सार्थकता के परीक्षण हेतु टी-अनुपात की गणना की गई।

दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता की जांच- जब प्रतिदर्शों का आकार ३० या ३० से अधिक होता है तो उनके मध्यमानो की अंतर की जांच क्रांतिक अनुपात द्वारा की जाती है क्रांतिक अनुपात की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जाती है –

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1{}^2}{N_1} + \frac{\sigma_2{}^2}{N_2}}}$$

Scanned with OKEN Scanner

चार विकल्पों को १-१ अंक दिए गए हैं। प्रश्न ७ के विकल्प (ब) को २ अंक तथा (स) को १ अंक प्रदान किया गया है। प्रश्न २६ में भी विकल्प स्वयं को २ अंक तथा बटाईदार को १ अंक प्रदान किया गया है।

३.९ सांख्यिकीय प्रविधियाँ

विभिन्न परीक्षणों पर प्राप्त प्राप्तांकों की प्रक्रियाओं एवं वितरण का अध्ययन करने हेतु अधोलिखित विवरणात्मक तथा अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया-

मध्यमान

विभिन्न समूहों का औसत स्तर वर्णित करने तथा विभिन्न अध्ययनरत् कतिपय चरों के परिप्रेक्ष्य में प्राप्त वितरण की ककूदता एवं विषमता के मापन हेतु केंद्रीय प्रवृत्ति के माप के रूप में तथा विभिन्न समूहों की तुलना करने हेतु मध्यमान की गणना की गई। छात्र-छात्राओं के आधार पर समूहों की तुलना करने हेतु मध्यमान परिगणित किया गया।

Mean:- $M=\sum\frac{X}{N}$

जहाँ-

M=मध्यमान $\sum$ = योग

X=प्राप्तांक N=प्राप्ताकों की संख्या

प्रतिशत

किसी दिए गए न्यादर्श में प्रतिशत की गणना तब उपयोगी होती है, जब व्यवहार का प्रदर्शन निश्चित अभिवृद्धि की गहनशीलता या अन्य विशेषताएं प्रकट होती हैं एवं जब प्रत्यक्षत: इन विशेषताओं की गणना संभव हो जाती है। किसी व्यवहार की उपस्थिति में प्रतिशत दिया जाना प्रश्न उत्पन्न करता है कि हम इन संख्याओं में कितना विश्वास प्रकट कर सकते हैं १०० के आधार पर जो संख्या प्राप्त होती है, उसे प्रतिशत कहते हैं प्रतिशत को संक्षेप चिह्न % द्वारा व्यक्त किया जाता है प्रतिशत ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है-

प्रतिशत= $\frac{\text{प्राप्तकों की संख्या}}{\text{पूर्णकों की संख्या}} \times १००$

Scanned with OKEN Scanner

जहाँ M_1 = पहले का समान्तर माध्य

M_2 = दूसरे का समान्तर माध्य

N_1 = पहले समूह का आकार

N_2 = दूसरे समूह का आकार

σ_1 = पहले समूह का मानक विचलन

σ_2 = दूसरे समूह का मानक विचलन

Scanned with OKEN Scanner

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

Scanned with OKEN Scanner

चतुर्थ अध्याय   प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत्तों का विश्लेषण शोध प्रक्रिया का एक प्रमुख भाग है, जिससे प्राप्त परिणामों की व्याख्या करके शोधकर्ता अपनी परिकल्पनाओं की पुष्टि करता है तथा अध्ययन से संबंधित निष्कर्ष का प्रतिपादन करता है। इस प्रकार प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ प्रदत्तों में निहित तथ्यों को निश्चित करने के लिए सामग्री का सारिणीयन का अध्ययन करना है।

करलिंगर के शब्दों में "विश्लेषण के अंतर्गत आंकड़ों/ प्रदत्तों को क्रमबद्ध रूप प्रदान किया जाता है तथा उसके संघटक के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है ताकि अनुसंधान के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जा सकें। "

इस लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य प्रशिक्षु प्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन कराना है इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जैविक कृषि जागरूकता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

४.१ विद्यार्थियों में जैविक जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

प्रशिक्षु प्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता के लिए प्रश्नवार प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया है जो इस प्रकार है-

जैविक जागरूकता प्रश्नावली के खण्ड (अ) के प्रश्नों का विश्लेषण

प्रश्न १ जैविक कृषि करते हैं।

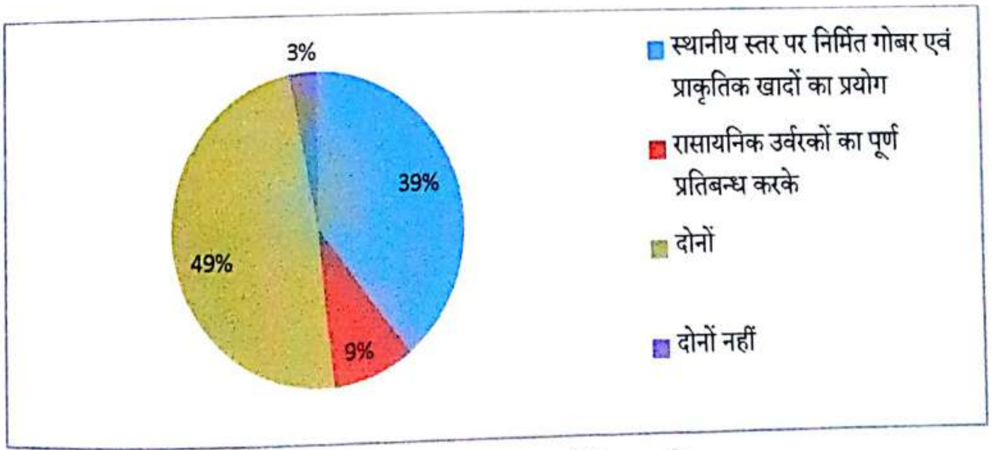

रेखाचित्र संख्या ४.१.१ जैविक कृषि

Scanned with OKEN Scanner

जैविक कृषि की जानकारी करने पर यह पता चला कि ३९.५% विद्यार्थियों का मत है कि स्थानीय स्तर पर निर्मित गोबर एवं प्राकृतिक खादों का प्रयोग करके जैविक कृषि की जाती है तथा ९% विद्यार्थियों ने रासायनिक उर्वरकों का पूर्ण प्रतिबंध करके एवं ४८.५% विद्यार्थियों ने दोनों वाले विकल्प में सहमति दी लेकिन वहीं ३% विद्यार्थियों ने दोनों विकल्पों को सहमति नहीं दी है, जिससे यह पता चलता है कि सभी विद्यार्थियों को अभी भी जैविक कृषि के प्रति जागरूकता प्रदान करना आवश्यक है।

प्रश्न २. आप सामान्यता है कब कब उत्पाद खरीदते हैं?

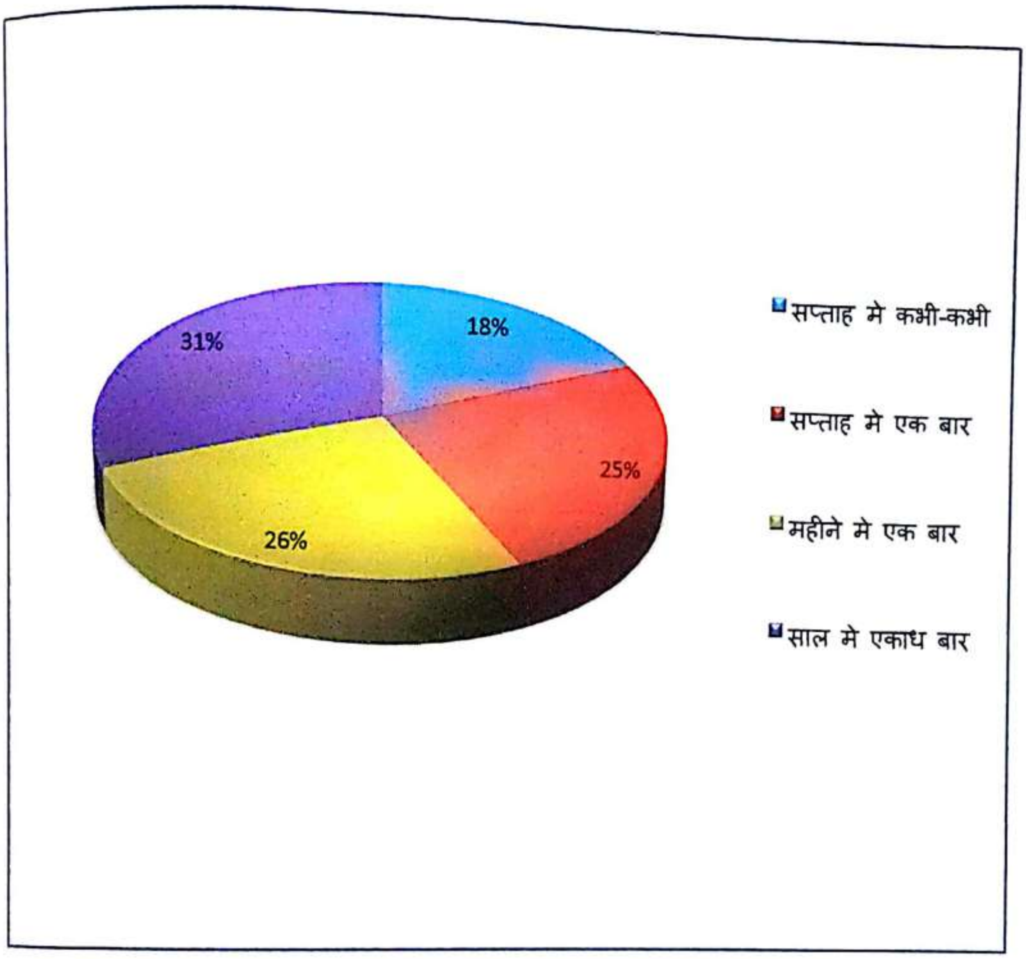

रेखाचित्र संख्या ४.१.२ सामान्यतः कब-कब जैविक उत्पाद खरीदते हैं

Scanned with OKEN Scanner

जैविक उत्पाद खरीदने संबंधी जानकारी पर १८% विद्यार्थियों ने सप्ताह में कभी -कभी खरीदना स्वीकार किया तथा २५% विद्यार्थी सप्ताह में एक बार और २६.५% महीने में एक बार व ३१%विद्यार्थी साल में एकाध बार खरीदते हैं। अतःयह कहा जा सकता है कि सप्ताह में जैविक उत्पाद खरीदने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम है।

प्रश्न ३. आप सामान्यतः जैविक उत्पाद कहां से खरीदते हैं?

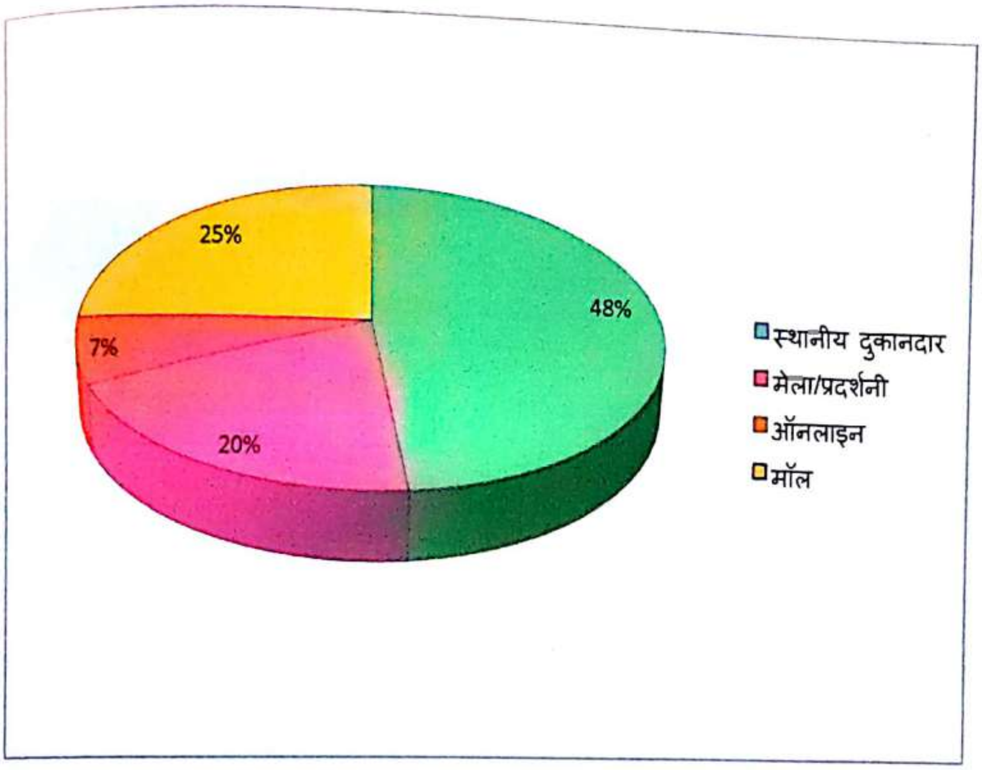

रेखाचित्र संख्या ४.१.३ जैविक उत्पाद कहाँ से खरीदते हैं

जैविक पदार्थ कहां से खरीदते हैं इस संबंध में प्राप्त जानकारी में ४५% विद्यार्थी स्थानीय दुकानदार से खरीदते हैं तथा १९.५%विद्यार्थी मेला/ प्रदर्शनी से व ७% विद्यार्थी ऑनलाइन खरीददारी करते हैं और २४% विद्यार्थी उत्पादक से व २.५% ऐसे हैं जो मॉल से खरीदारी करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न ४.आप इस तरह के जैविक उत्पाद खरीदते हैं?

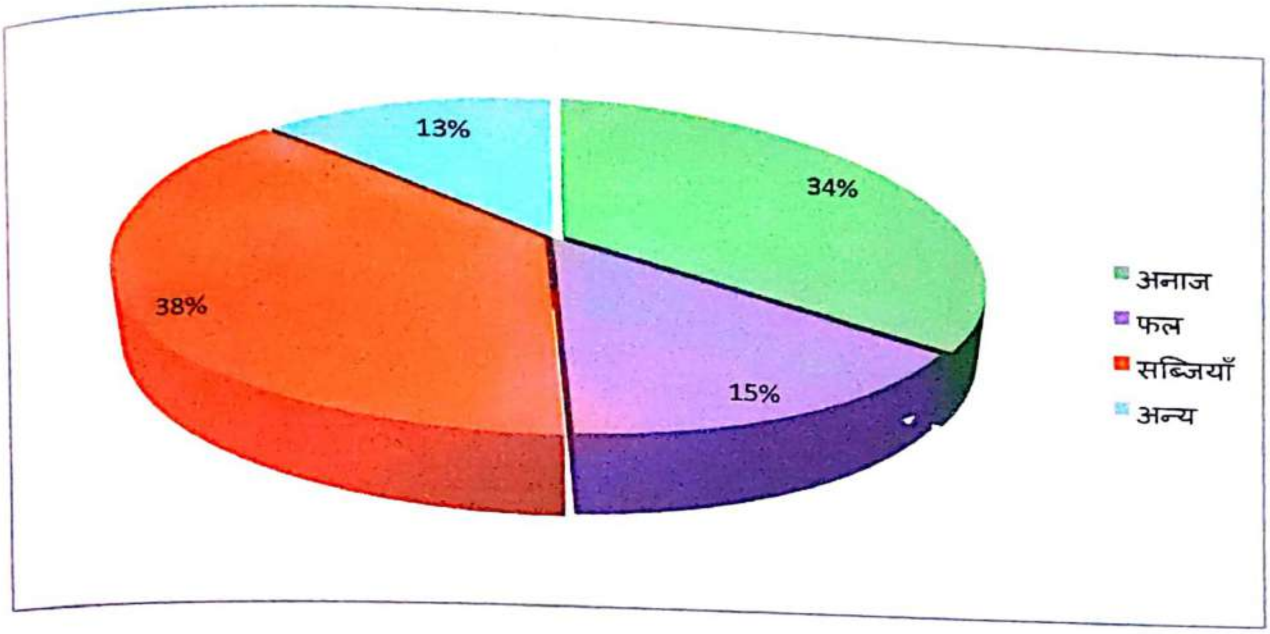

रेखाचित्र संख्या ४.१.४ जैविक उत्पाद खरीदते हैं

जैविक उत्पाद खरीदने के संबंध में ३४.८६% विद्यार्थी अनाज तथा ३८.५५% सब्जियां खरीदते हैं और १५.५९% फल तथा शेष ११% विद्यार्थी अन्य जैविक उत्पाद खरीदते हैं। अत: पाया गया कि सबसे ज्यादा जैविक उत्पाद में सब्जियाँ खरीदी जाती हैं। वहीं अनाज अपना द्वितीय स्थान कायम किए हुये है। लेकिन कुछ ऐसे भी विद्यार्थी हैं जो उनके अलावा अन्य उत्पादों कि खरीददारी करते हैं।

प्रश्न ५. आप जैविक उत्पाद क्यों चुनते हैं?

Scanned with OKEN Scanner

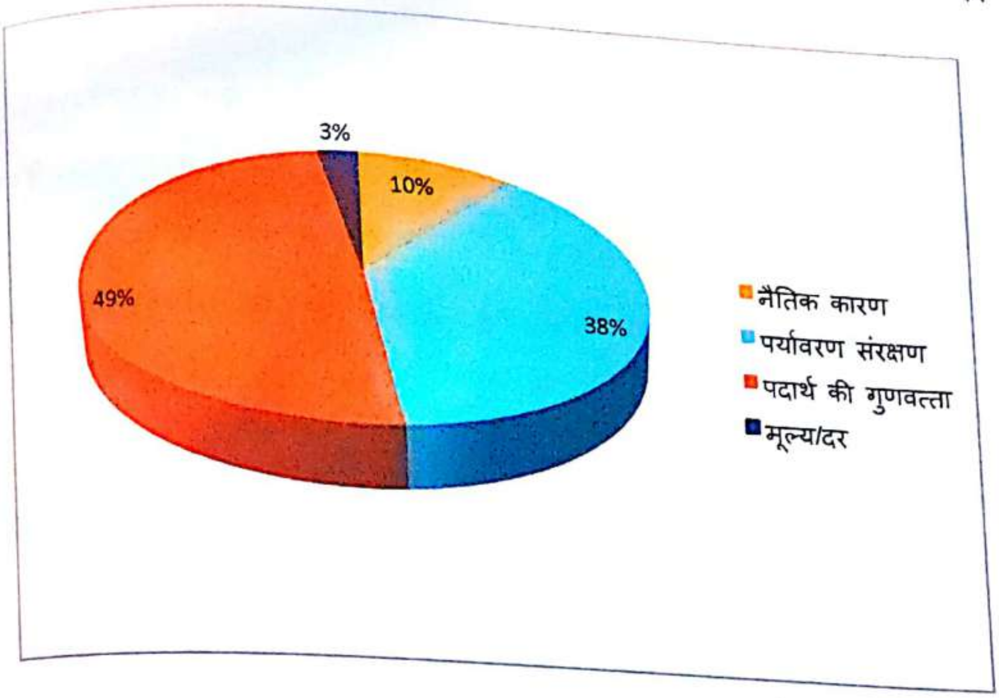

रेखाचित्र संख्या ४.१.५ जैविक उत्पाद चुनते हैं

जैविक उत्पाद चुनने के सम्बन्ध में जानकारी को प्राप्त करने पर पता चला है कि ९.८६% विद्यार्थी नैतिक कारण बताते हैं तथा ३८.४२% विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण, ४९.२६% विद्यार्थी पदार्थ की गुणवत्ता और २.४६% विद्यार्थी मूल्य/दर का समर्थन किए हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बहुत से विद्यार्थी पदार्थ की गुणवत्ता और पर्यावरण संरक्षण के लिए जैविक उत्पाद चुनते हैं।

प्रश्न ६. निम्न में किस उत्पाद का अधिक प्रयोग करते हैं?

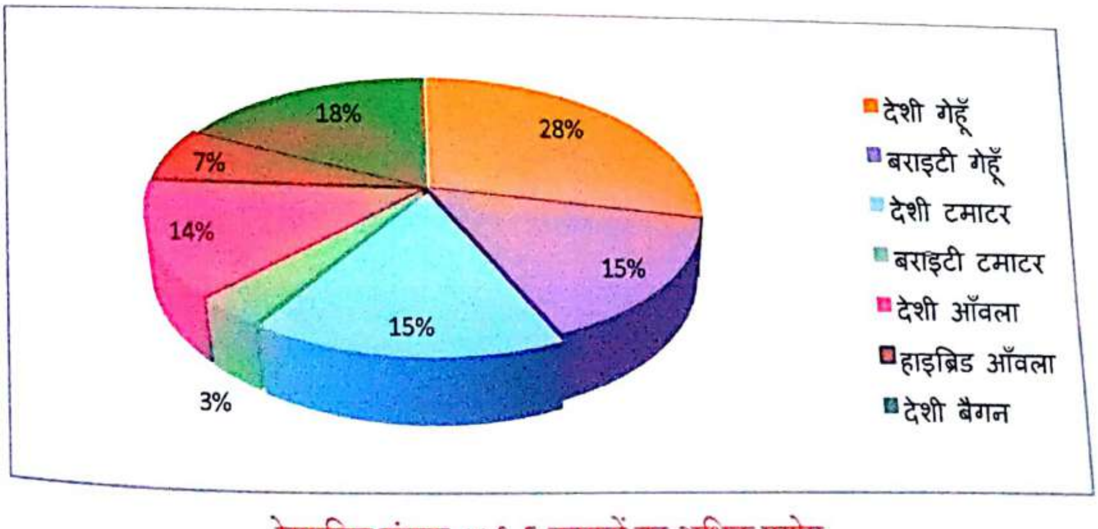

रेखाचित्र संख्या ४.१.६ उत्पादों का अधिक प्रयोग

उत्पादों के अधिक प्रयोग के संदर्भ में प्राप्त की गई जानकारी में २७.२२% विद्यार्थी देशी गेहूं का प्रयोग करते हैं तथा १४.७४% विद्यार्थी वरायटी गेहूं का प्रयोग करते हैं तथा १४.७४% विद्यार्थी देशी टमाटर और ३.१८% वरायटी टमाटर का प्रयोग करते हैं। १२.९२% विद्यार्थी देशी आंवला तथा ६.३४% विद्यार्थी हाइब्रिड आंवला का प्रयोग करते हैं। १७.२४% विद्यार्थी देशी बैगन तथा ३.६२% विद्यार्थी बैगन का प्रयोग करते हैं।

प्रश्न ७. हम अपने खेतों में प्रयोग करते हैं।

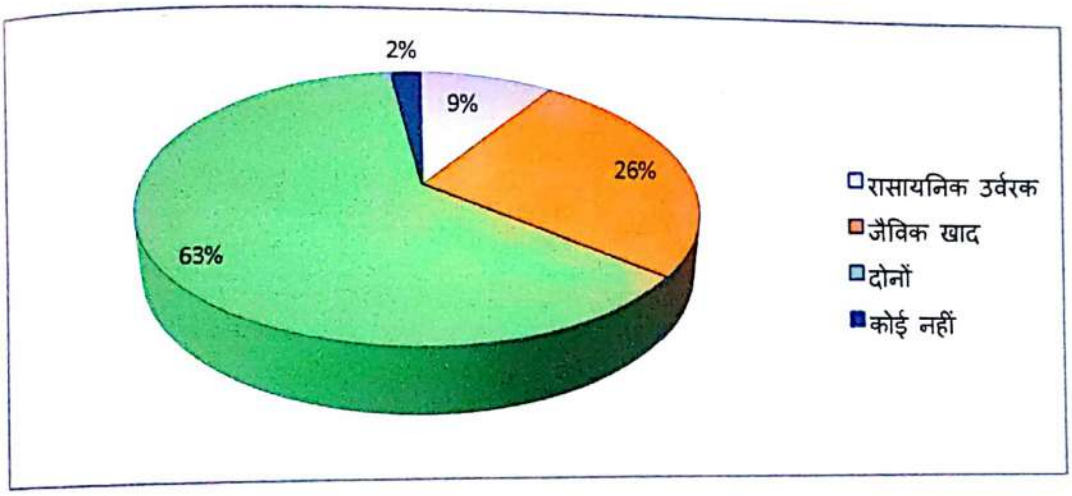

रेखाचित्र संख्या ४.१.७ अपने खेतो मे प्रयोग करते हैं

हम अपने खेतों में रासायनिक उर्वरक तथा जैविक खादों का प्रयोग करते हैं इस संदर्भ में प्राप्त जानकारी में ९% विद्यार्थी रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं तथा २६.५% विद्यार्थी जैविक खादों का प्रयोग करते हैं और ६२.५% विद्यार्थी दोनों के प्रयोग को सहमति प्रदान की है व २% विद्यार्थी इनमें से किसी में सहमति नहीं दी है।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न ८. पौधों के वृद्धि एवं विकास के लिए कितने पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

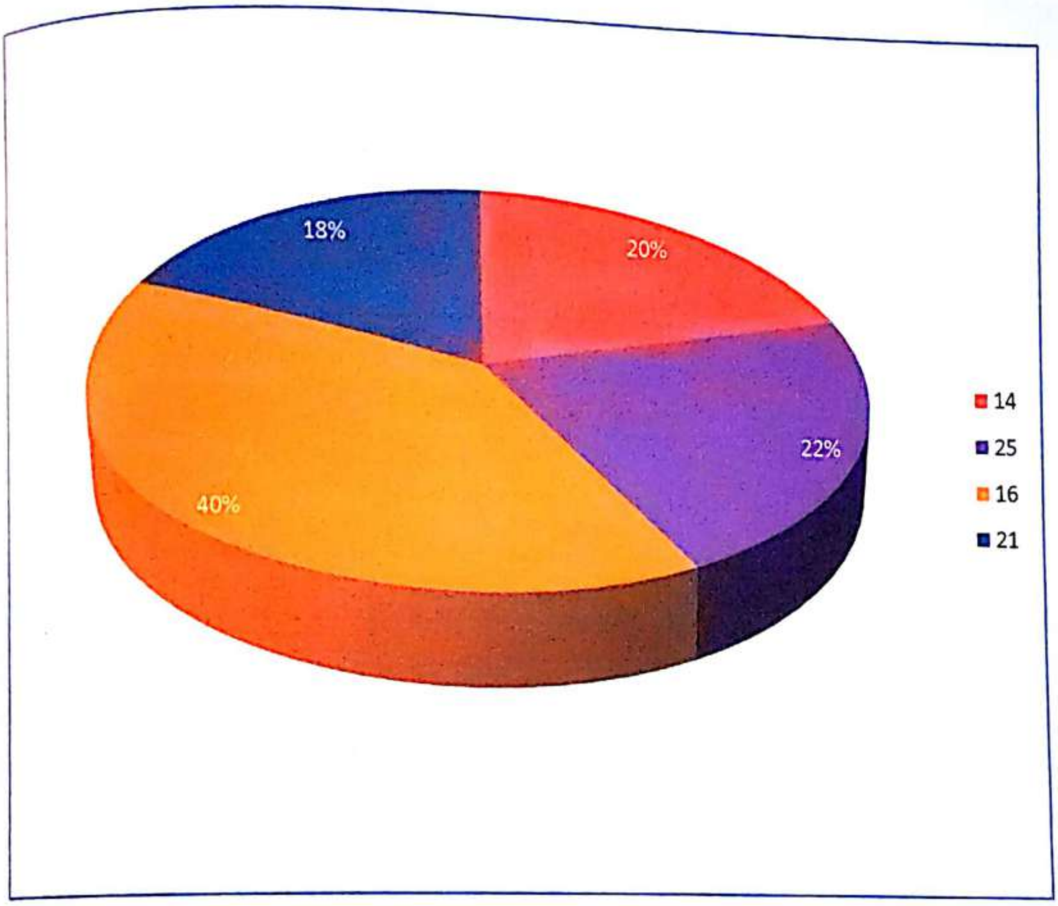

रेखाचित्र संख्या ४.१.८ वृद्धि एवं विकास के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता

पौधों की वृद्धि और विकास के लिए २०% विद्यार्थियों ने १४ पोषक तत्वों को सहमति दी है तथा २२% विद्यार्थी २५ पोषक तत्वों को सहमति दी है। ४०% विद्यार्थियों ने १६ पोषक तत्वों को आवश्यक बताए हैं शेष १८% विद्यार्थी २१ पोषक तत्वों को आवश्यक समझते हैं यह जानकारी विभिन्न विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त गयी।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न ९. जैविक खाद बनाने की पद्धति है।

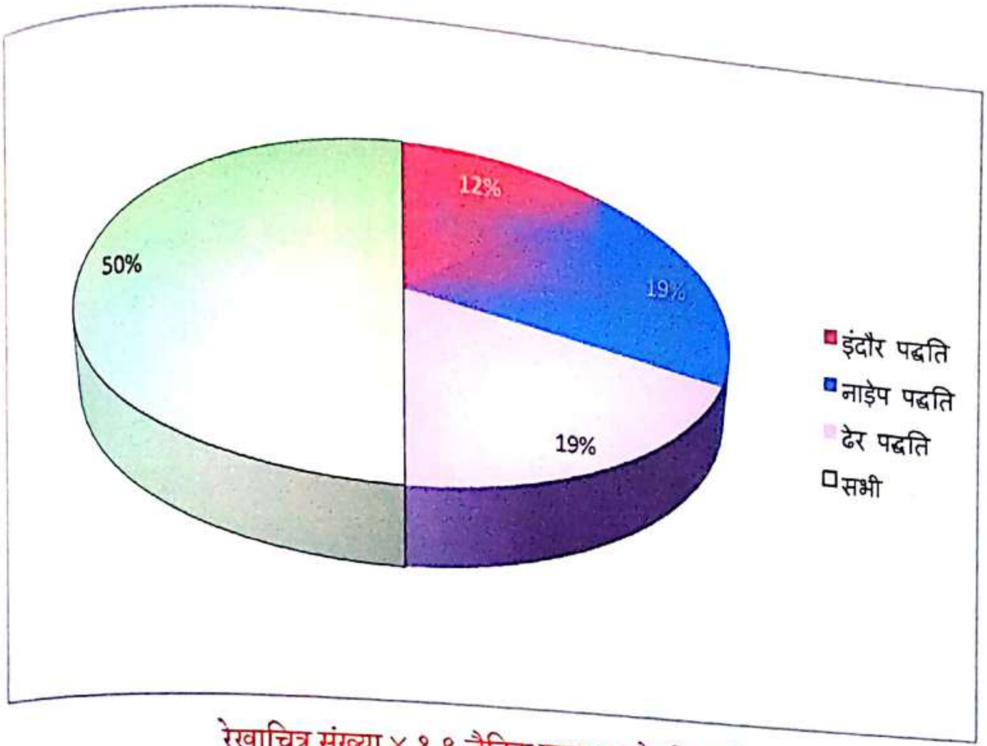

रेखाचित्र संख्या ४.१.९ जैविक खाद्य बनाने की पद्धति

जैविक खाद बनाने की पद्धतियों के बारे में प्राप्त की गई जानकारी में १२% विद्यार्थी इंदौर पद्धति को ही बताया है तथा १९% विद्यार्थी नाडेप पद्धति में राय दी है और १९% विद्यार्थी ढेर पद्धति व शेष 50% विद्यार्थियों ने सभी पद्धतियों को जैविक खाद बनाने की पद्धतियां बताई है।

प्रश्न १०. रासायनिक खाद के अधिकाधिक प्रयोग से कौन सा रोग बढ़ रहा है।

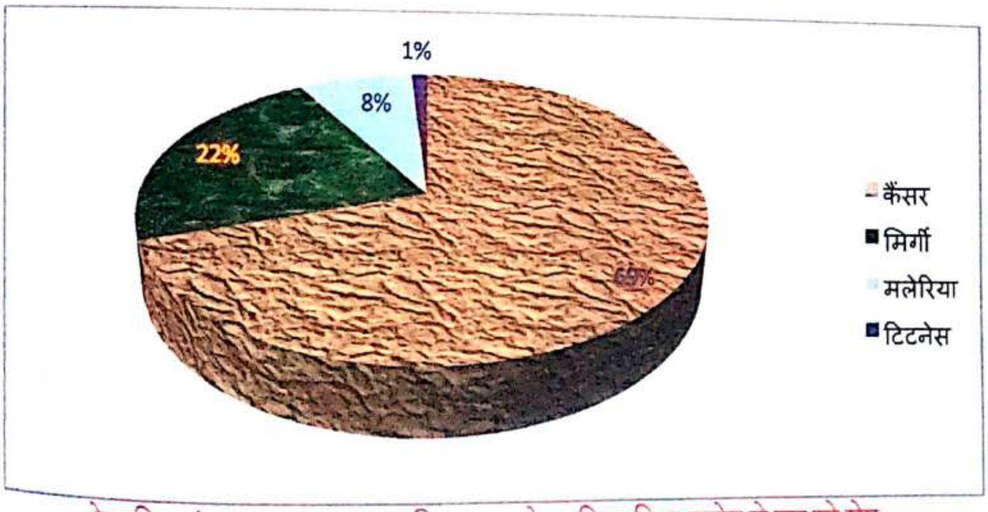

रेखाचित्र संख्या ४.१.१० रासायनिक खाद्य के अधिकाधिक प्रयोग से बढ़ रहे रोग

Scanned with OKEN Scanner

इस संबंध में प्राप्त जानकारी से पता चला कि ६९.५% विद्यार्थियों ने कैंसर रोग को बताया है तथा २२% विद्यार्थी मिर्गी के लिए और ७.५% विद्यार्थी मलेरिया १% विद्यार्थी टिटनेस के लिए जानकारी दी है प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकलता है की रसायनिक खादों के प्रयोग से कैंसर रोग ही होता है।

प्रश्न ११. राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र कहां है?

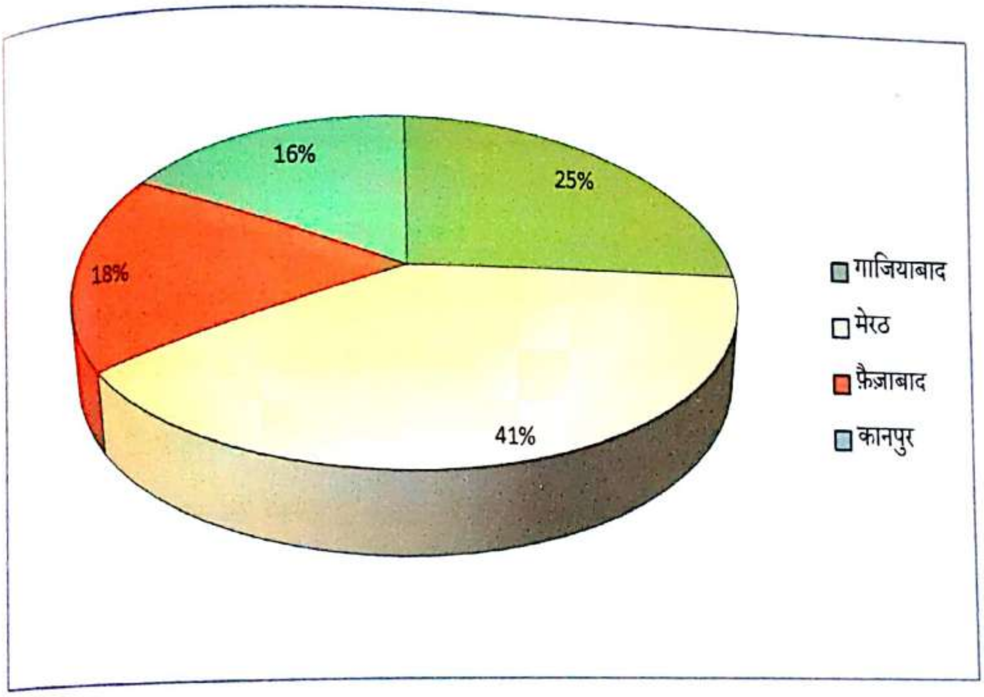

रेखाचित्र संख्या ४.१.११ राष्ट्रीय जैविक केन्द्र

राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र की प्राप्त जानकारी को २५.५% विद्यार्थी गाजियाबाद तथा ४१% विद्यार्थी मेरठ को बताए हैं और १८% फैजाबाद व १५.५% विद्यार्थी कानपुर मानते हैं जोकि सही विकल्प को आधे से भी आधे विद्यार्थियों ने स्वीकारा है।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न १२. भारत का संपूर्ण जैविक राज्य कौन सा है?

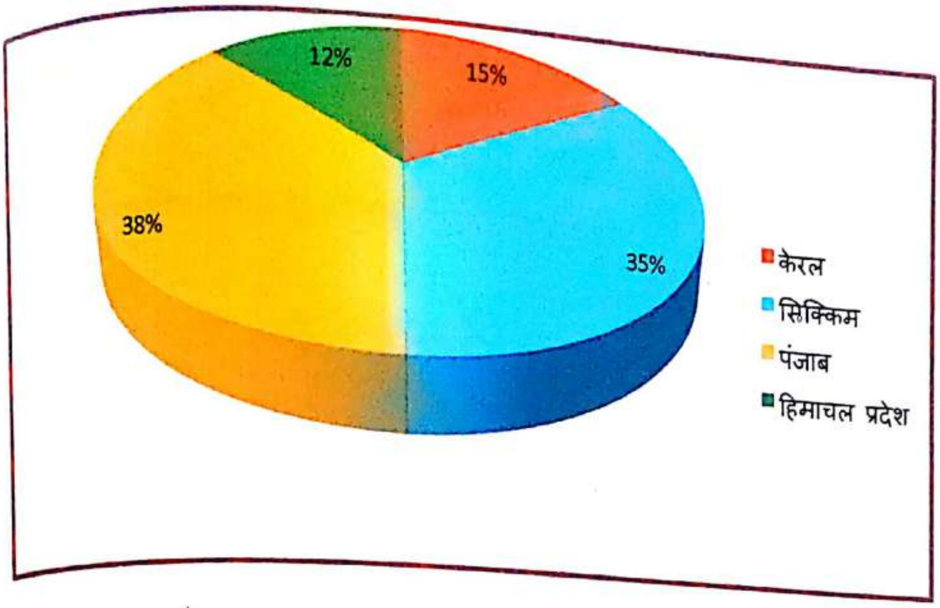

रेखाचित्र संख्या ४.१.१२ भारत का सम्पूर्ण जैविक राज्य

भारत का संपूर्ण जैविक राज्य के बारे में प्राप्त जानकारी से पता चलता है कि१५% विद्यार्थी केरल को तथा ३५% विद्यार्थियों ने सिक्किम राज्य को स्वीकारा है और ३८% विद्यार्थी पंजाब को तथा १२% विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश को मानते हैं, इससे यह पता चलता है कि इस संबंध में बहुत कम विद्यार्थी जागरूक हैं।

प्रश्न १३. भारतवर्ष मैं ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।

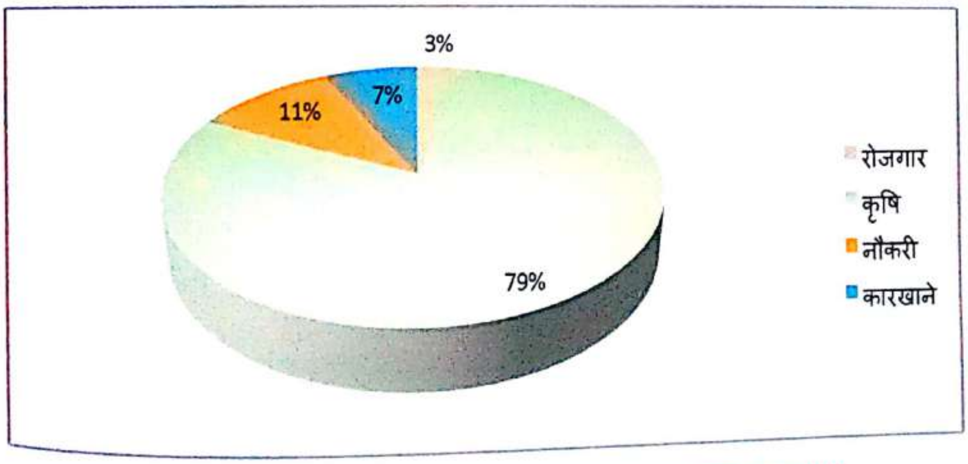

रेखाचित्र संख्या ४.१.१३ भारत वर्ष मे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार

Scanned with OKEN Scanner

भारतवर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार के बारे में प्राप्त जानकारी को ३.५% विद्यार्थी रोजगार को तथा ७९% विद्यार्थियों ने कृषि को मानते हैं और १०.५% विद्यार्थी नौकरी तथा ७% कारखाने को मानते हैं लेकिन अधिक से अधिक विद्यार्थी कृषि को मानते हैं।

प्रश्न १४. जैविक कृषि वातावरण के प्रति दयालतापूर्ण/ हितैषी है।

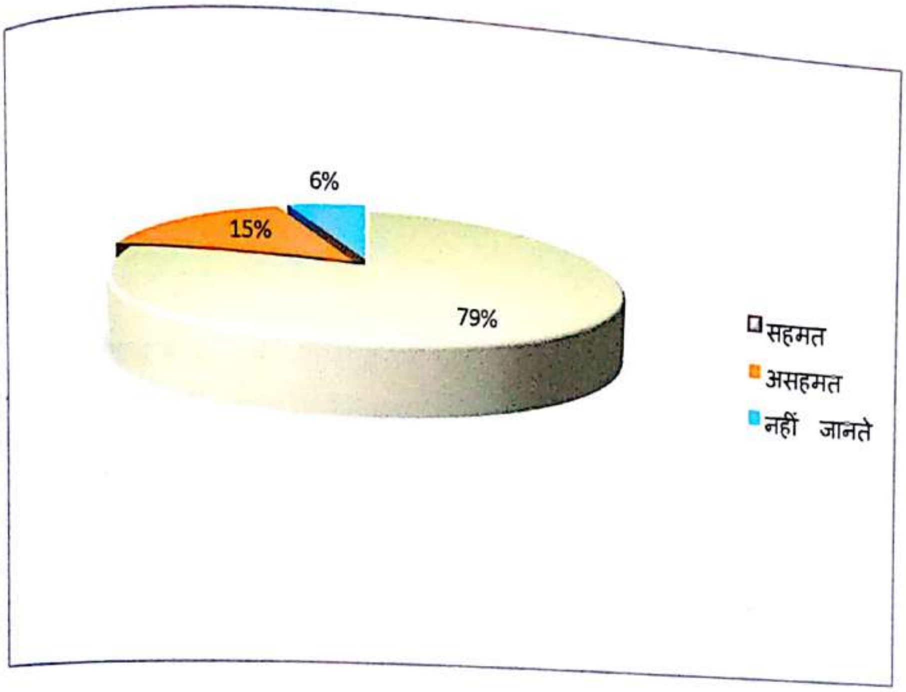

रेखाचित्र संख्या १.४.१४ जैविक कृषि वातावरण के प्रति दयालुतापूर्ण/हितैषी

जैविक कृषि वातावरण के प्रति हितैषी है, इसके लिए प्राप्त की गई जानकारी से पता चला कि ४९.५% विद्यार्थी सहमत प्रदान किए हैं तथा ४४% विद्यार्थी असहमत शेष ६.५% विद्यार्थी नहीं जानते की हितैषी है कि नहीं।

प्रश्न १५. हम अपनी खेती के खरपतवार कीत एवं रोगों पर नियंत्रण बिना रसायनों के नहीं कर सकते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

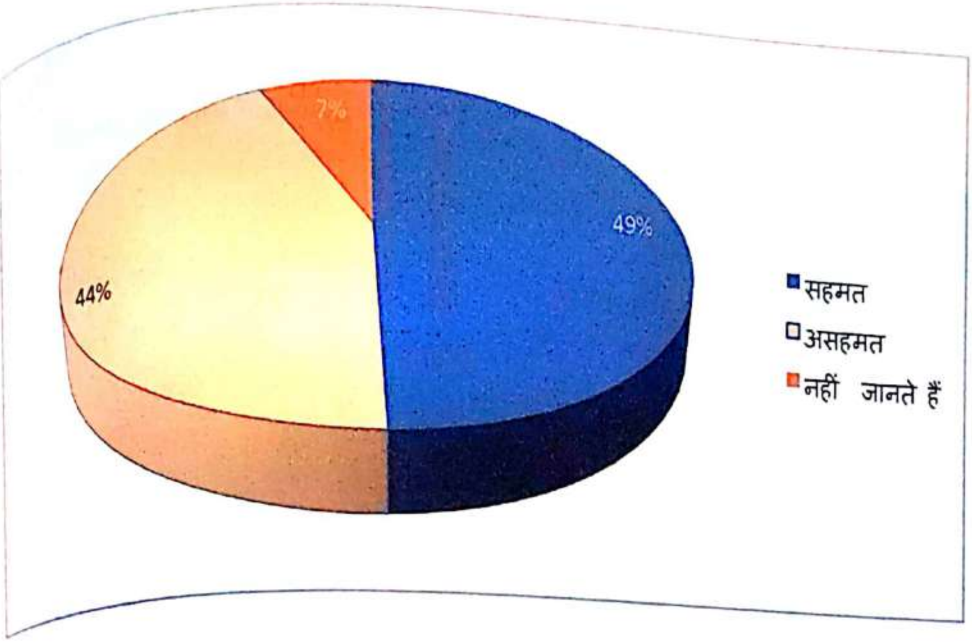

रेखाचित्र संख्या ४.१.१५ अपनी खेती के खरपतवार, कीट एवं रोगो पर नियंत्रण बिना रसायनो के नहीं

दिए गए ग्राफ से यह पता चलता है कि खेती के खरपतवार कीट एवं रोगों पर नियंत्रण बिना रसायनों के नहीं कर सकते हैं प्राप्त जानकारी में ७९.५% विद्यार्थी सहमति दी है तथा १५% असहमति किंतु कुछ ऐसे भी हैं जो नहीं जानते कि नियंत्रण कर सकते हैं या नहीं।

प्रश्न १६. जैविक कृषि वैदिक कालीन प्राचीन परंपरागत कृषि पद्धति है।

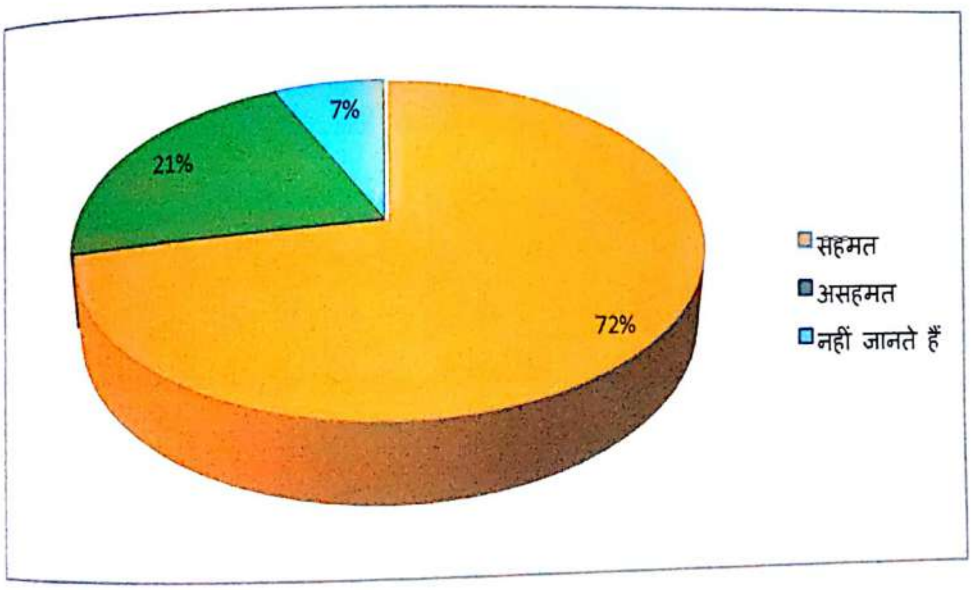

रेखाचित्र संख्या ४.१.१६ जैविक कृषि वैदिक कालीन कृषि पद्धति

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न १८. आजकल जैविक कृषि अधिक लोकप्रिय है।

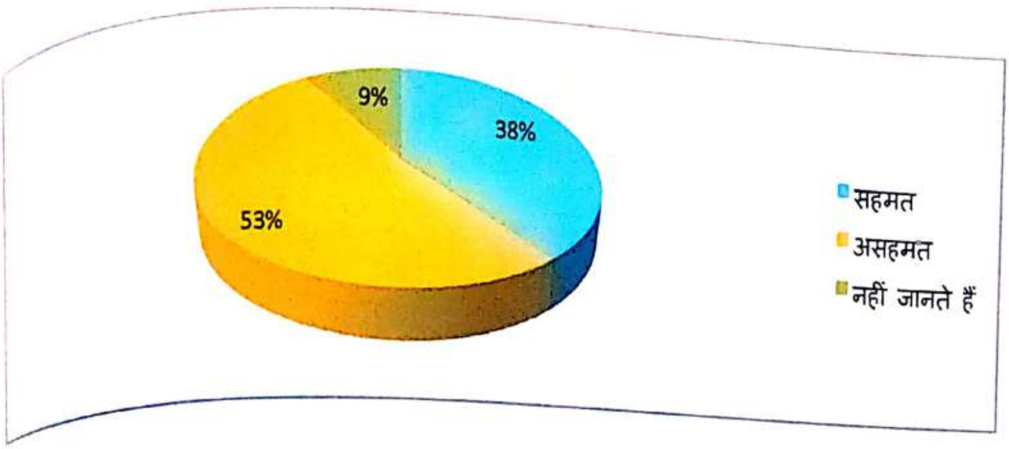

रेखाचित्र संख्या ४.१.१८ आजकल जैविक कृषि अधिक लोकप्रिय है

आजकल जैविक कृषि अधिक लोकप्रिय है इसके लिए ३८.५% विद्यार्थी सहमत हैं वहीं ५२.५% विद्यार्थी असहमत हैं तथा ९% विद्यार्थी नहीं जानते कि कौन सी कृषि अधिक लोकप्रिय है। प्राप्त निष्कर्षों से यह पता चलता है कि जैविक कृषि के बारे में कुछ विद्यार्थी ही जागरूक हैं।

प्रश्न १९. जैविक कृषि आज के समय में व्यवहारिक नहीं है।

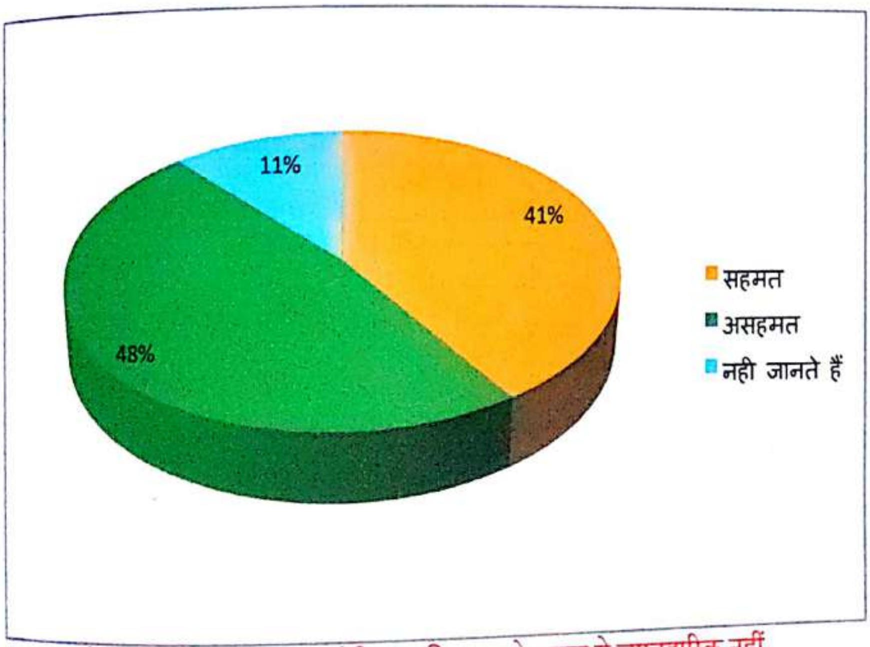

रेखाचित्र संख्या ४.१.१९ जैविक कृषि आज के समय मे व्यावहारिक नहीं

Scanned with OKEN Scanner

इसकी जानकारी प्राप्त करने पर पता चला कि ४१% विद्यार्थी सहमत हैं तथा ४८% विद्यार्थी असहमत और ११% विद्यार्थी नहीं जानते कि जैविक कृषि आज के समय में व्यावहारिक है कि नहीं।

प्रश्न २०. जैविक कृषि किसानों को अपने ज्ञान एवं कौशल के भरपूर उपयोग का अवसर प्रदान करती है।

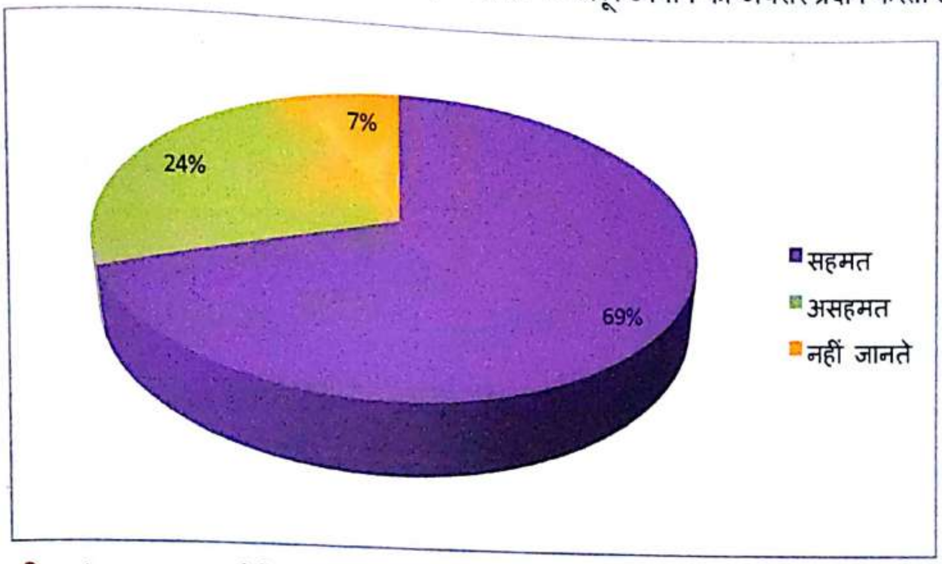

रेखाचित्र संख्या ४.१.२० जैविक कृषि किसानों को अपने ज्ञान एवं कौशल के उपयोग का अवसर प्रदान

प्राप्त विश्लेषण के बाद पता चला कि इस बात को ६९% विद्यार्थी स्वीकार करते हैं और २४.५% विद्यार्थी नहीं स्वीकार करते तथा ६.५% विद्यार्थी इस बात को जानते ही नहीं हैं।

प्रश्न २१. जैविक कृषि मानव तथा मृदा दोनों के स्वास्थ्य के लिए हितकारी है।

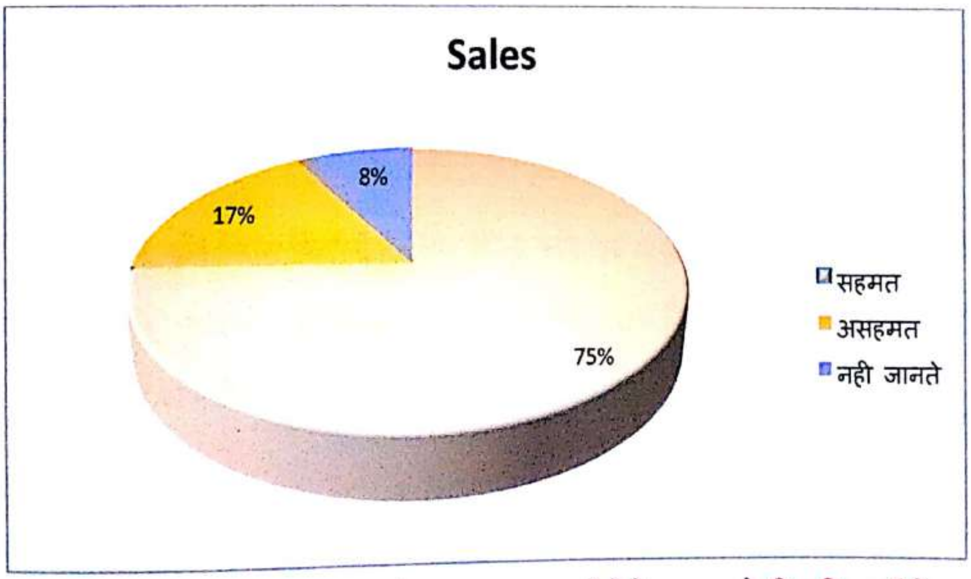

रेखाचित्र संख्या ४.१.२१ जैविक कृषि मानव तथा मृदा दोनों के स्वास्थ्य के लिए हितकारी है

Scanned with OKEN Scanner

जैविक कृषि मानव तथा मृदा दोनों के स्वास्थ्य के लिए हितकारी है, इसकी जानकारी करने के बाद पता चला है कि ७५% विद्यार्थी इसे स्वीकारते हैं तथा १७% विद्यार्थी नहीं स्वीकारते और ८% विद्यार्थी इस बात को नहीं जानते हैं। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों को और जागरूक करना आवश्यक है।

प्रश्न २२. आधुनिक कृषि से निराश किसानों के लिए जैविक कृषि एक वरदान है।

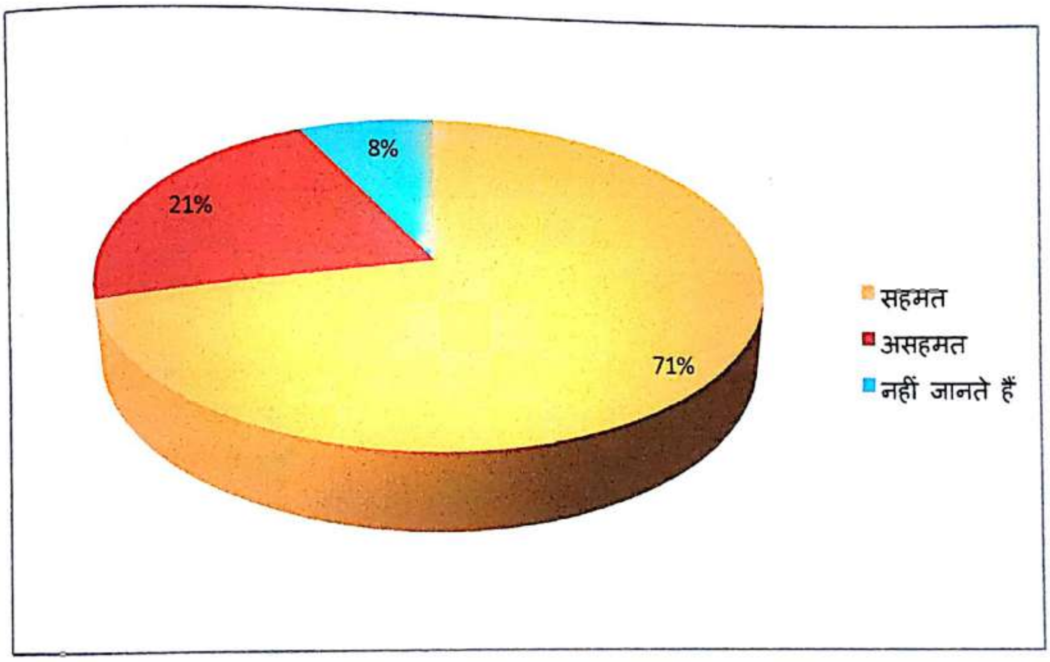

रेखाचित्र संख्या ४.१.२२ आधुनिक कृषि से निराश किसानो के लिए जैविक कृषि एक वरदान

आधुनिक कृषि निराश किसानों के लिए जैविक कृषि एक वरदान है इसकी जानकारी प्राप्त करने पर पता चला कि ७१% विद्यार्थी इस बात से सहमत हैं तथा २१% विद्यार्थी असहमत हैं और ७.५% विद्यार्थी इस बात को नहीं जानते हैं कि यह वरदान साबित है कि नहीं।

प्रश्न २३. वर्मी कंपोस्ट बनाने में प्रयुक्त आयतित केंचुआ (आयसेनिया फिटिडा) मृदा के लिए हानिकारक है।

Scanned with OKEN Scanner

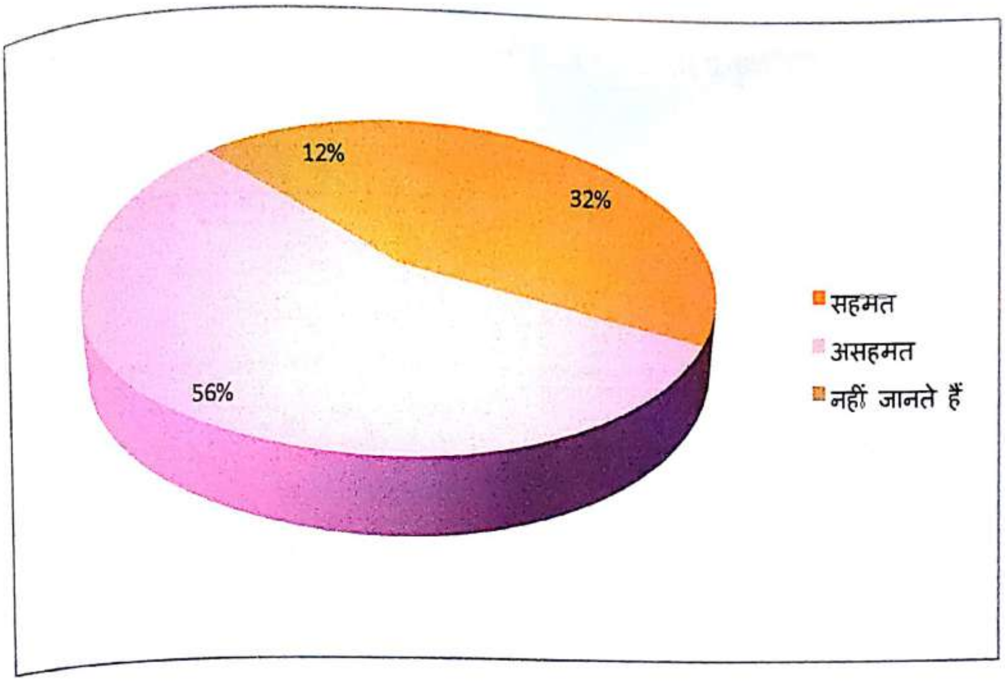

रेखाचित्र संख्या ४.१.२३ आयसेनिया फिटिडा नामक केचुआ मृदा के लिए हानिकारक है

इसकी जानकारी लेने के बाद पता चला कि ३२% विद्यार्थी इस बात से सहमत हैं तथा ५६.५% विद्यार्थियों ने असहमत प्रदान किए हैं और ११.५% विद्यार्थी इस बात को नहीं जानते हैं।

प्रश्न २४. क्या आप कृषक परिवार से हैं?

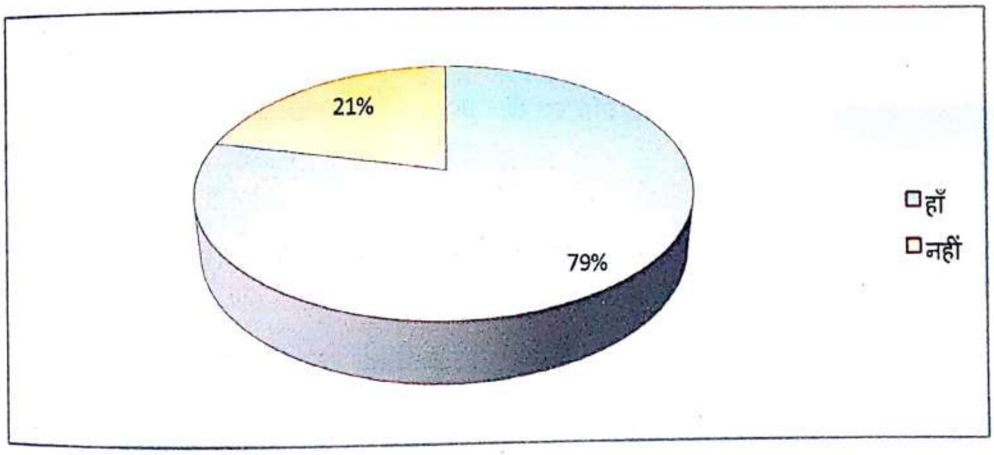

रेखाचित्र संख्या ४.१.२४ आप कृषक परिवार से हैं

कृषक परिवार संबंधी जानकारी उपलब्ध करने पर पता चला कि ७९% विद्यार्थियों ने स्वीकारा है कि हम कृषक परिवार से हैं तथा २१% विद्यार्थी वह भी हैं जिनके परिवार में कृषि नहीं की जाती है।

प्रश्न २५. कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल... बीघा है।

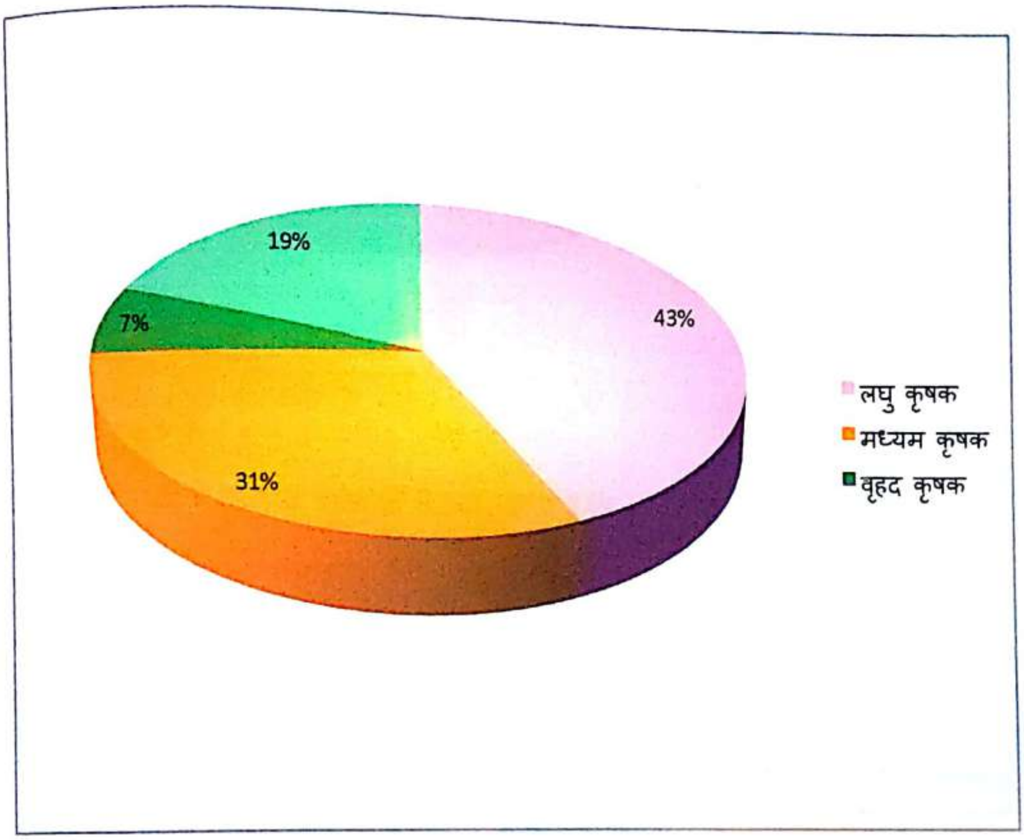

रेखाचित्र संख्या ४.१.२५ कृषि एवं भूमि का क्षेत्रफल

कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल संबंधी जानकारी उपलब्ध करने पर पता चला कि ४३% विद्यार्थी लघु कृषक परिवार से हैं तथा ३१.५% विद्यार्थी मध्यम कृषक घराने से हैं और ६.५% विद्यार्थी वृहत कृषक घराने से हैं।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न २६. आपके परिवार में कृषि की जाती है।

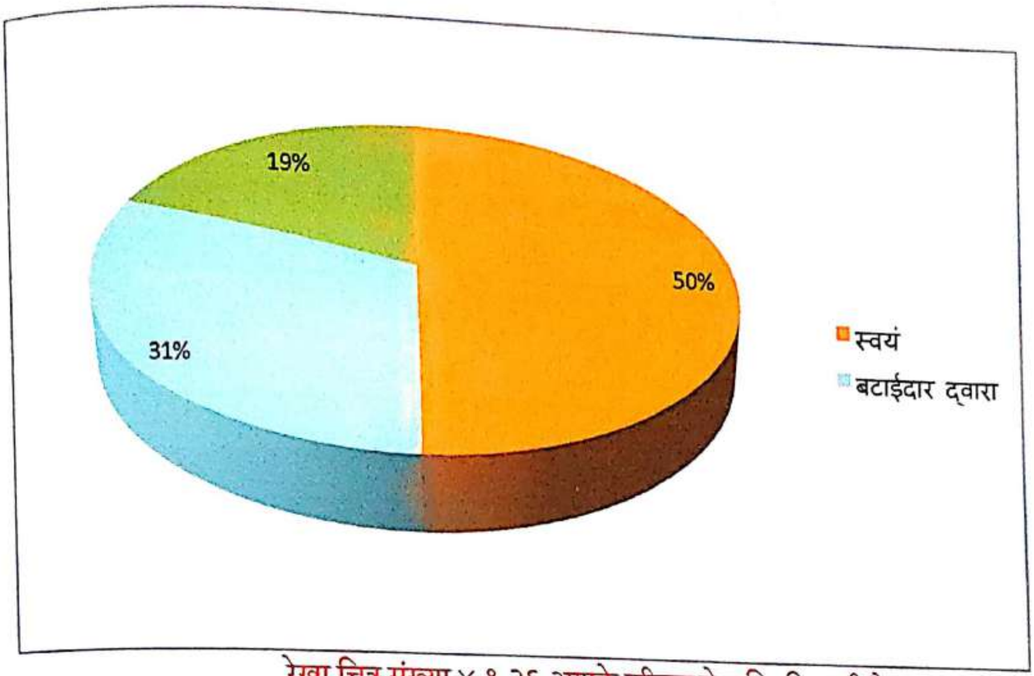

रेखा चित्र संख्या ४.१.२६ आपके परिवार मे कृषि की जाती है

इस संबंध में उपलब्ध जानकारी से पता चलता है कि ५०% विद्यार्थियों ने जानकारी दी है कि उनके परिवार में कृषि स्वयं की जाती है तथा एक ३०% विद्यार्थियों ने इस संबंध में जानकारी दी है कि उनके परिवार में कृषि कार्य बटाईदार द्वारा कराए कराया जाता है।

प्रश्न २७. क्या आप मानते हैं कि जैविक उत्पाद स्वास्थ्य वर्धक है।

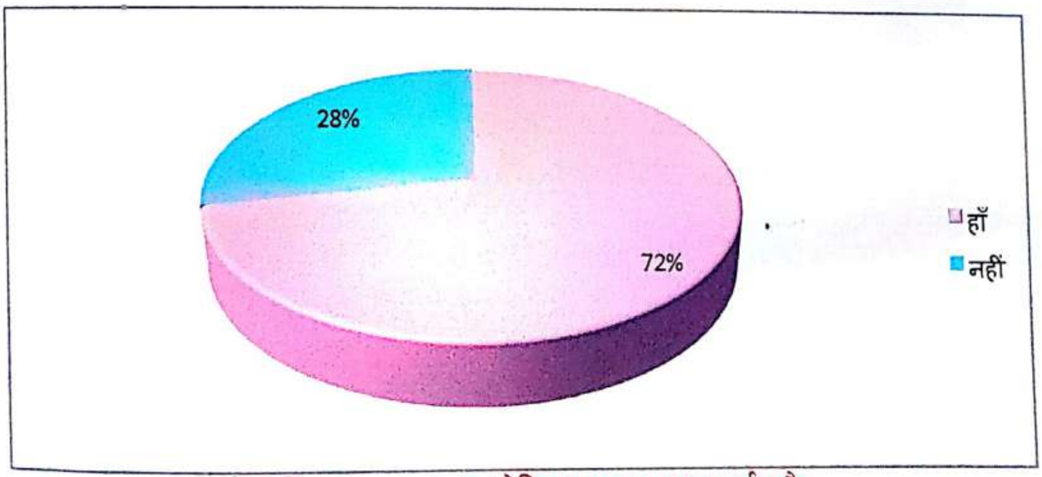

रेखाचित्र संख्या ४.१.२७ जैविक उत्पाद स्वस्थ्य वर्धक है

Scanned with OKEN Scanner

जैविक उत्पाद स्वास्थ्यवर्धक है इसकी जानकारी उपलब्ध करने पर ७२% विद्यार्थी स्वीकार करते हैं कि यह स्वास्थ्य वर्धक है तथा २८% विद्यार्थी अस्वीकार करते हैं कि जैविक उत्पाद स्वास्थ्य वर्धक है।

प्रश्न २८. जैविक उत्पादों की कीमत अधिक होने पर भी क्या आप उन्हें खरीदेंगे?

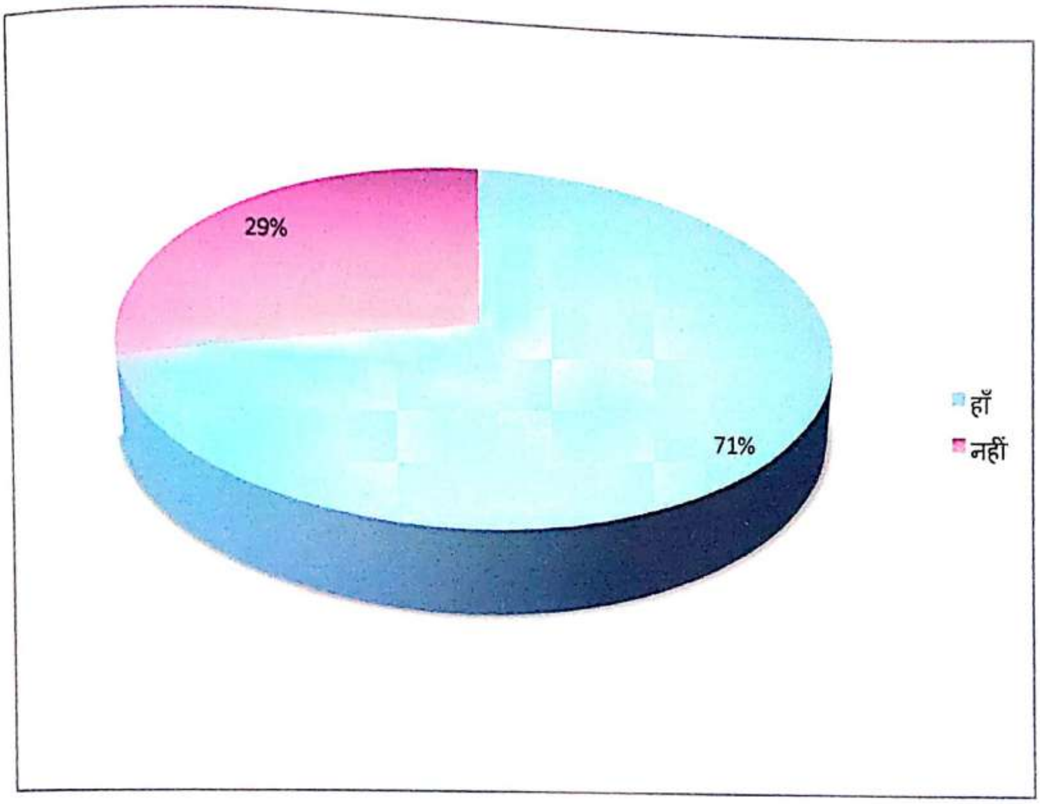

रेखाचित्र संख्या ४.१.२८ जैविक उत्पादों की कीमत अधिक होने पर भी उन्हें खरीदेंगे

जैविक उत्पाद महंगे होने पर भी खरीद संबंधी जानकारी उपलब्ध करने पर पता चला कि ७१.५% विद्यार्थियों ने स्वीकार किया तथा २८.५% विद्यार्थियों ने इसे अस्वीकार किया है।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न २९. जैविक उत्पादों से कम कैलोरी प्राप्त होती है।

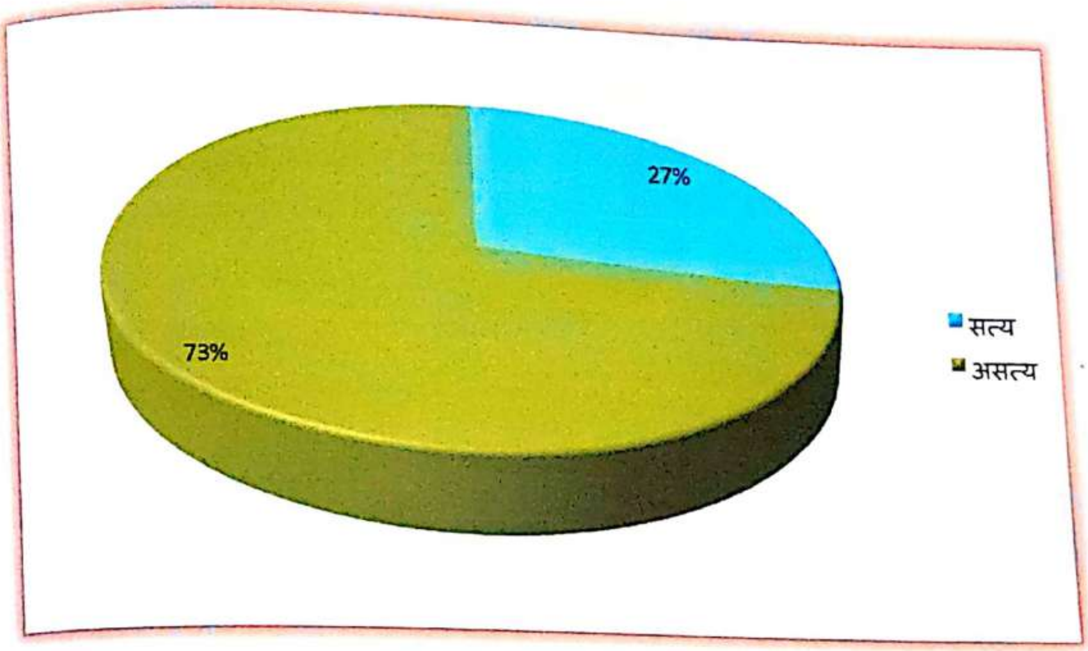

रेखाचित्र संख्या ४.१.२९ जैविक उत्पादों से कम कैलोरी प्राप्त होती है

जैविक उत्पादों से प्राप्त कैलोरी के बारे में उपलब्ध जानकारी से यह पता चलता है कि २७.५% विद्यार्थी इस बात को सत्य मानते हैं कि जैविक उत्पादों से कम कैलोरी प्राप्त होती है तथा ७२.५% विद्यार्थी असत्य मानते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न ३०. जैविक किसान उर्वरकों का प्रयोग नहीं करते हैं।

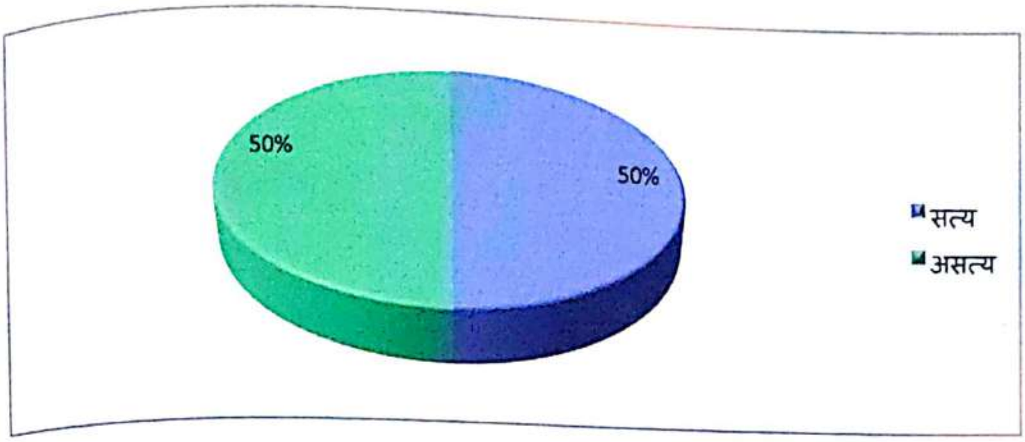

रेखाचित्र संख्या ४.१.३० जैविक किसान उर्वरकों का प्रयोग नहीं करते

जैविक किसान उर्वरकों का उपयोग नहीं करते इस संबंध में उपलब्ध जानकारी से पता चला कि ५०% विद्यार्थी इसे सत्य मानते हैं तथा ५०% विद्यार्थी इसे असत्य मानते हैं।

प्रश्न ३१. जीरो बजट प्राकृतिक खेती मांगी है।

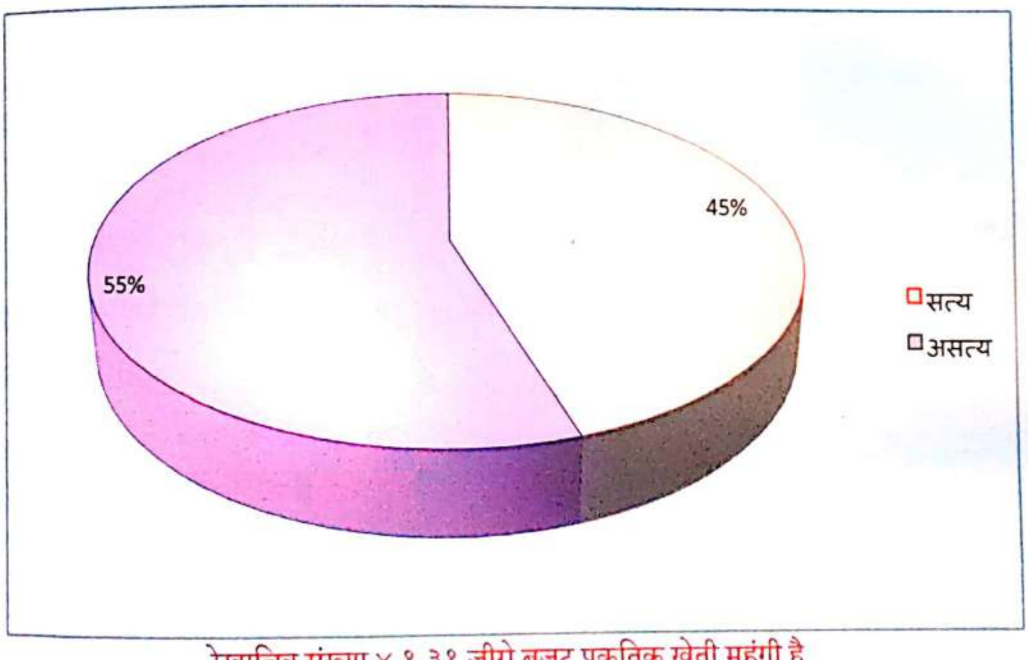

रेखाचित्र संख्या ४.१.३१ जीरो बजट प्रकृतिक खेती महंगी है

Scanned with OKEN Scanner

जीरो बजट प्राकृतिक खेती मांगी है इस बारे में उपलब्ध जानकारी में ४५% विद्यार्थी ही स्वीकार किए हैं तथा ५५% विद्यार्थी इसे अस्वीकार करते हैं इसलिए इसके प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करना आवश्यक है।

प्रश्न ३२. जैविक कृषि गौ आधारित है।

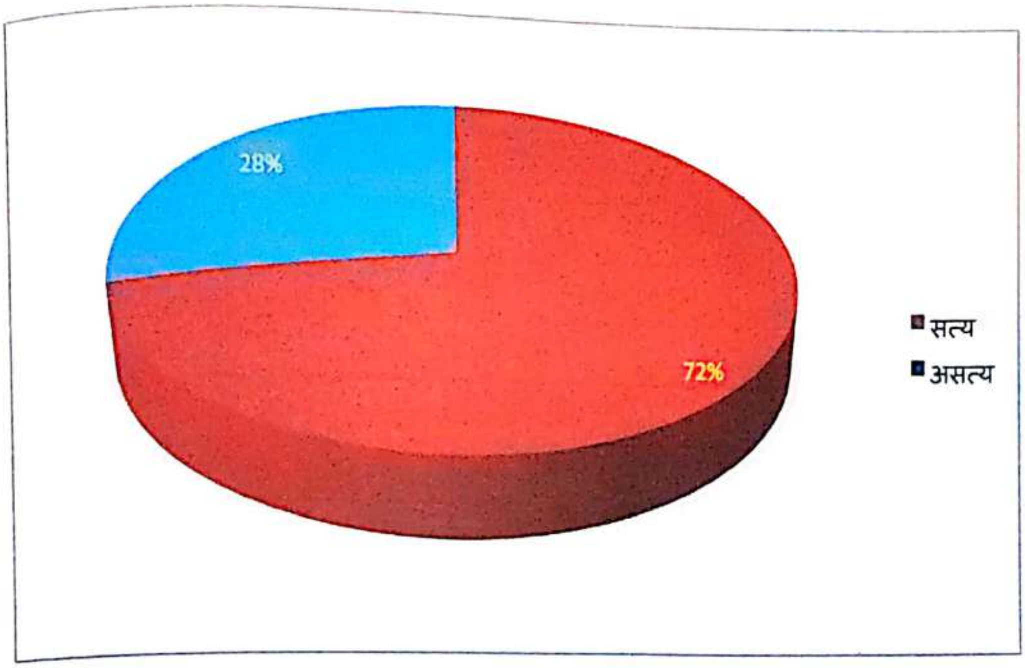

रेखाचित्र संख्या ४.१.३२ जैविक कृषि गौ आधारित है

जैविक कृषि गौ आधारित है इसकी जानकारी उपलब्ध करने पर पता चला है कि ७२%विद्यार्थियों ने इसे सत्य माना है तथा २८% विद्यार्थी इसे असत्य मानते हैं।

प्रश्न ३३. भारतीय कृषि में उर्वरकों का प्रयोग हरित क्रांति के बाद बहुतायत से होने लगा।

Scanned with OKEN Scanner

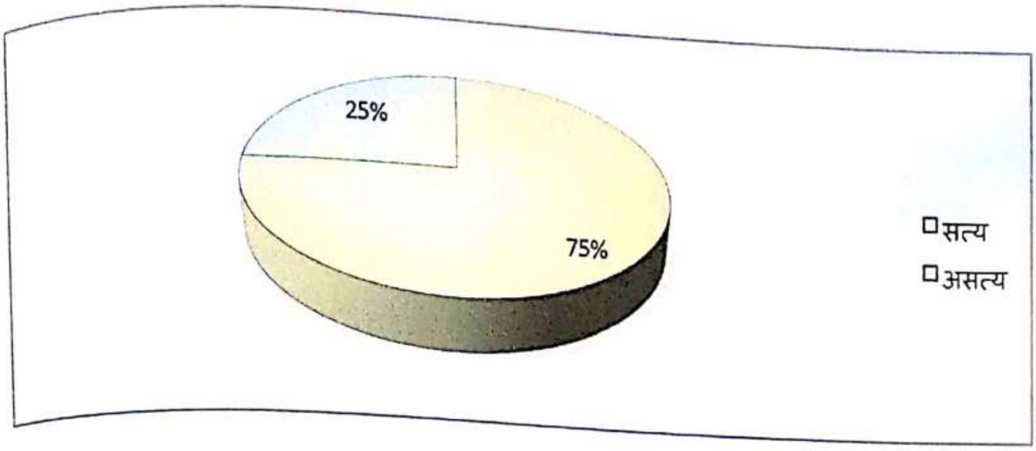

रेखाचित्र संख्या ४.१.३३ भारतीय कृषि मे उर्वरकों का प्रयोग हरित क्रांति के बाद बहुतायत से होने लगा

उर्वरकों के प्रयोग संबंधी जानकारी करने पर पता चला कि ७५% विद्यार्थियों ने इस बात को सत्य मानते हैं कि उर्वरकों का अधिकाधिक प्रयोग हरित क्रांति के बाद से होने लगा है तथा २५% विद्यार्थियों ने इसे असत्य माना है।

प्रश्न ३४. वर्टिकल फार्मिंग द्वारा बहुमंजली इमारतों में खेती की जाती है।

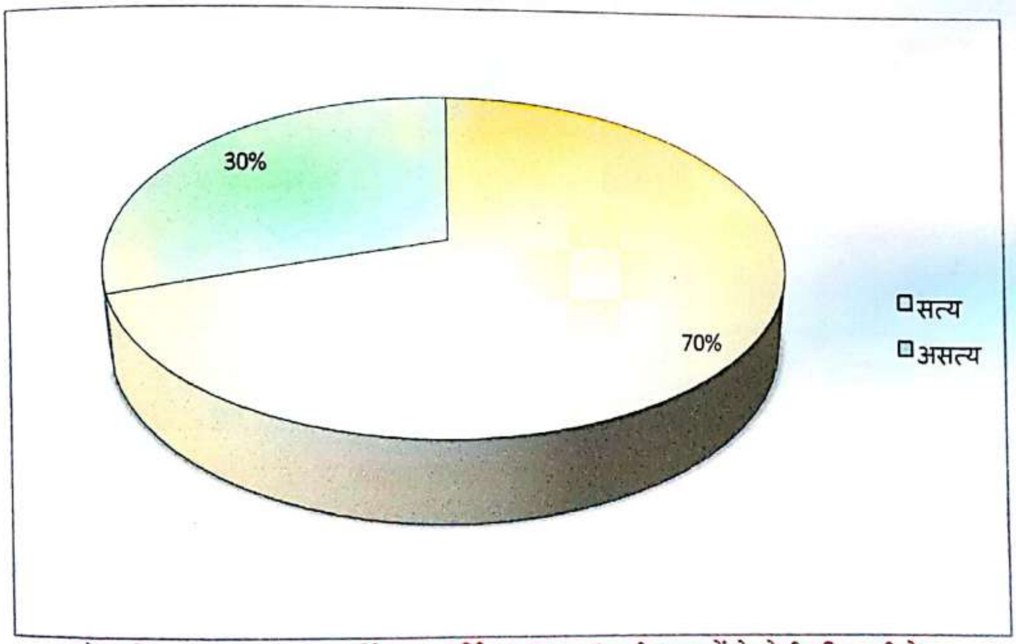

रेखाचित्र संख्या ४.१.३४ वर्टिकल फ़ार्मिंग द्वारा बहुमंजली इमारतों मे खेती की जाती है

Scanned with OKEN Scanner

बहुमन्जली इमारतों में खेती संबंधित जानकारी से पता चलता है कि ७०% विद्यार्थियों ने इसे सत्य स्वीकार करते हैं और ३०% विद्यार्थी इसे अस्वीकार करते हैं, निष्कर्ष यह निकलता है इसकी जानकारी बहुत से विद्यार्थियों को है।

४.२ छात्र- छात्राओं मे जैविक जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

४.२.१ लिंग के अनुसार विद्यार्थियों मे मध्यमान एवं मानक विचलन के बीच अंतर की सार्थकता

श्रेणी	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रांश	गणना मान	तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	२२.४	४.०९	१९८	३.०७२	१.९६२	.०५	स्वीकृत
छात्रा	२०.६७	३.६०					

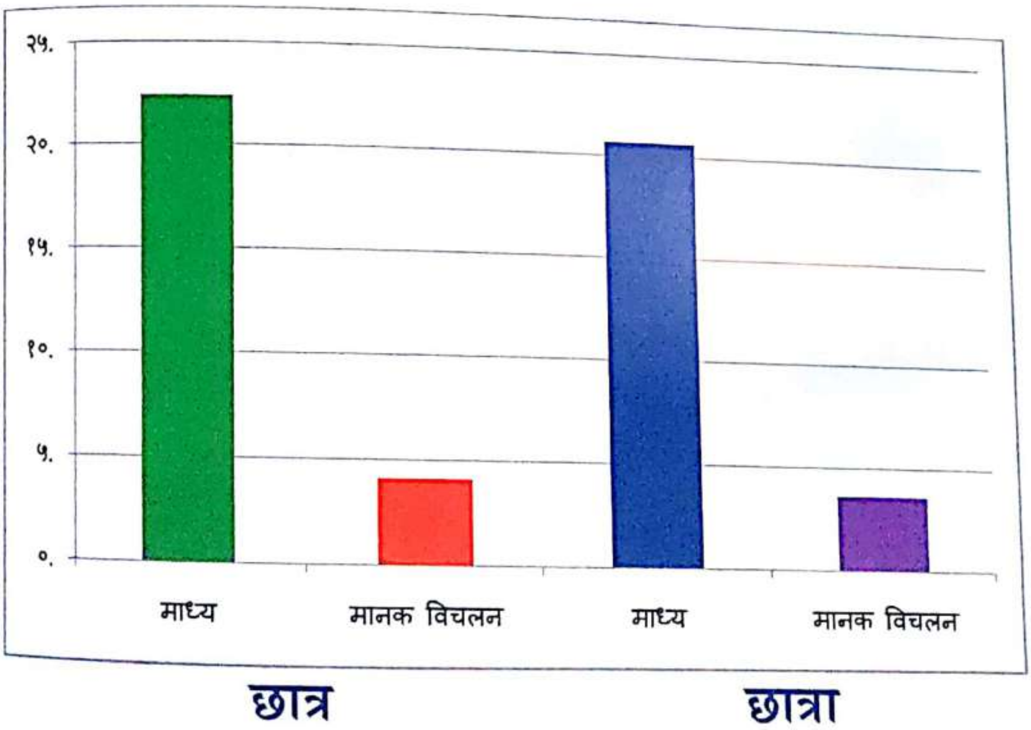

४.२.१ लिंग के अनुसार जैविक कृषि जागरूकता के आधार पर मध्यमान व मानक विचलन

Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि लिंग के अनुसार छात्रों का माध्य २०.६७ व छात्राओं का माध्य २२.४ है तथा परिगणित क्रांतिक अनुपात ३.०७२ है जो कि स्वतंत्रांश १९८ के लिए ०.०५ सार्थकता स्तर पर क्रांतिक अनुपात के सारिणी मान १.९६२ से काफी अधिक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि छात्र-छात्राओं में जैविक कृषि जागरूकता के संबंध मे बराबर जानकारी रखते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

Scanned with OKEN Scanner

पंचम अध्याय निष्कर्ष एवं सुझाव

५.१ निष्कर्ष

कृषि की चुनौतियों से निपटने के लिए जैविक खाद का इस्तेमाल आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, इस तरह की खेती के प्रारंभिक चरणों में आर्थिक लाभ कम होने से किसान जैविक खेती के तौर-तरीके अपनाने लगते हैं लेकिन यह इस तरह की खेती के फायदों के बारे में किसानों की जानकारी की कमी दर्शाता है सरकारी एजेंसियों और योजनाओं में इस कमी को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिएइसके लिए कृषक समुदाय को जैविक खेती की तकनीकों के बारे में विशाल देकर जानकारी दी जानी चाहिए। वे पारंपरिक खेती के तरीकों के बारे में विशेषज्ञता हासिल कर सकें।

जैविक प्रणाली में सभी घटकों के सही मात्रा में उपयोग करते हुए अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए अच्छे प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकता होती है, इसलिए खेती के प्रबंधकों ने किसानों को संसाधनों का उचित मात्रा में लगातार उपयोग सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। भारत में जैविक खेती की अपार संभावनाएं हैं इसलिए खेती की जैविक विधियों के प्रमाणन के लिए और अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

- जैविक खेती की जानकारी प्राप्त करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों को इसके प्रति जागरूक करने की अभी भी आवश्यकता है।
- जैविक उत्पाद कुछ विद्यार्थी सप्ताह कभी-कभी तथा कुछ सप्ताह में एक बार और कुछ महीने में एक बार व कुछ विद्यार्थी साल में एकाध बार खरीदते हैं अतः विभिन्न पदों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अभी जैविक उत्पाद खरीदने की जानकारी को और अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है।
- जैविक पदार्थों की खरीददारी की जानकारी करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सबसे अधिक विद्यार्थी स्थानीय दुकानदार से खरीददारी करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

- जैविक उत्पाद में अनाज फल सब्जियां व अन्य कुछ उत्पाद खरीदने के संबंध में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकलता है कि अन्य उत्पाद कम खरीदे जाते हैं जो कि मुख्य उत्पादों के बाद भी अन्य उत्पाद खरीदें।
- जैविक उत्पाद अपने स्वास्थ्य के लिए चुनते हैं नैतिक कारण एवं पदार्थ की गुणवत्ता, पर्यावरण संरक्षण ही माना गया।
- उत्पादों के अधिक प्रयोग के संदर्भ में प्राप्त निष्कर्षों से यह पता चला कि देशी गेहूं सबसे अधिक प्रयोग किया जा रहा है।
- हम अपने खेतों में जैविक खाद का प्रयोग करते हैं लेकिन अभी भी कुछ विद्यार्थी वंचित है उन्हें भी जागरूक करने की आवश्यकता है।
- पौधों की वृद्धि और विकास के लिए १६ पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है क्योंकि प्राप्त जानकारी से यह पता चलता है कि इसकी जानकारी बहुत से विद्यार्थियों को नहीं है जो कि जागरूक करना उन्हें भी अवश्यक है।
- जैविक खाद बनाने की बहुत-सी पद्धतियां है जिनकी जानकारी ५०% विद्यार्थियों को है लेकिन सभी विद्यार्थी बहुत सी पद्धतियां नहीं जानते हैं उनकी जानकारी हेतु उन्हें जागरूक करना आवश्यक है।
- रासायनिक खादों के अधिकाधिक प्रयोग से रोग बहुत तीव्र गति से बढ़ रहे हैं, उनमें से कैंसर रोग की जानकारी बहुत से विद्यार्थियों को है लेकिन प्राप्त निष्कर्ष से यह पता चलता है कि अभी भी कुछ विद्यार्थी वंचित हैं।
- राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र किस जगह स्थापित है इसकी जानकारी कुछ ही विद्यार्थियों को है तथा बहुत से विद्यार्थियों को नहीं है इसलिए उन्हें इसकी जानकारी होना आवश्यक समझा जाता है इसलिए इसे जानकारी देना आवश्यक है जिससे वह तरह तरह के जैविक खेती संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकें।
- भारत का संपूर्ण जैविक राज्य के बारे में प्राप्त जानकारी करने पर पता चला कि ३५% विद्यार्थियों ने ही सिक्किम राज्य बता पाएं इसलिए इसकी जानकारी भी सभी विद्यार्थियों को होनी चाहिए।
- भारतवर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार के बारे में प्राप्त जानकारी पर ७९% विद्यार्थियों ने कृषि को बताए हैं इससे यह निष्कर्ष निकलता है की अभी भी २१% विद्यार्थी इससे वंचित हैं।

Scanned with OKEN Scanner

- इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है की जैविक कृषि वातावरण के प्रति दयालुतापूर्ण/ हितैषी है, इस बारे में ४९.५% विद्यार्थियों ने ही सहमति दी है तथा शेष नहीं इसलिए इसकी जानकारी देकर उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है।
- खेती के खरपतवार, कीट एवं रोगों पर नियंत्रण बिना रसायनों के नहीं कर सकते हैं इसकी जानकारी प्राप्त करने पर यह निष्कर्ष निकलता है आधे से भी अधिक विद्यार्थियों ने इसकी सही जानकारी नहीं दी है इसलिए विद्यार्थियों को इसके प्रति जागरूक करना आवश्यक है।
- जैविक कृषि वैदिक कालीन प्राचीन परंपरागत कृषि पद्धति है इसकी सही जानकारी लगभग आधे से अधिक विद्यार्थियों को है।
- जैविक कृषि आधुनिक कृषि की तुलना में अधिक लाभदायक है। इसकी जानकारी प्राप्त करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ६५.५% विद्यार्थी सहमत हैं तथा २८% सहमत और ६.५% विद्यार्थियों को इसकी जानकारी भी नहीं।
- आजकल जैविक कृषि अधिक लोकप्रिय है इसकी जानकारी ३८.५% विद्यार्थियों को ही है तथा शेष विद्यार्थियों को नहीं है प्राप्त निष्कर्ष से यह पता चलता है कि इसके प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करना आवश्यक है।
- जैविक कृषि आज के समय में व्यावहारिक नहीं है प्राप्त निष्कर्ष से यह पता चलता है कि आधे लोगों को ही जानकारी है तथा शेष को नहीं इसलिए विद्यार्थियों को जागरूक करना आवश्यक है।
- जैविक कृषि किसानों को अपने ज्ञान एवं कौशल के भरपूर उपयोग का अवसर प्रदान करती है, इसकी जानकारी अधिकाधिक लोगों को है तथा सूक्ष्म मात्रा में कुछ विद्यार्थी हैं जिन्हें इनकी जानकारी नहीं है।
- जैविक कृषि मानव तथा मृदा दोनों के लिए हितकारी है इसकी जानकारी कुछ विद्यार्थियों को छोड़कर सभी को है जिनको इसकी जानकारी नहीं है उन्हें भी जागरूक करना आवश्यक है।
- आधुनिक कृषि से निराश किसानों के लिए जैविक कृषि वरदान है इसकी जानकारी से भी कुछ विद्यार्थी वंचित हैं, जिन्हें जागरूक करना आवश्यक है।

Scanned with OKEN Scanner

- वर्मी कंपोस्ट बनाने में प्रयुक्त आयतित केंचुआ मृदा के लिए हानिकारक है इसकी जानकारी प्राप्त करने के बाद पता चला कि इसकी जानकारी सूक्ष्म विद्यार्थियों ही है इसलिए सभी को जागरूक करना है।
- कितने विद्यार्थी कृषक परिवार से हैं तो ७९% विद्यार्थी ऐसे हैं जो कृषक परिवार से हैं, वहीं कुछ विद्यार्थी नहीं भी हैं।
- कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल संबंधी जानकारी उपलब्ध करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ४३% विद्यार्थी लघु कृषक तथा ३१.५% मध्यम कृषक परिवार से हैं शेष विद्यार्थी वृहत कृषक घराने से हैं।
- आपके परिवार में कृषि की जाती है स्वयं या बटाईदार द्वारा इस संबंध में ५०% विद्यार्थियों के यहां स्वयं खेती की जाती है तथा ३१% विद्यार्थियों के यहां बटाईदार द्वारा कृषि कार्य होता है।
- जैविक उत्पाद स्वास्थ्य वर्धक है इस संबंध में प्राप्त निष्कर्ष से यह पता चलता है कि ७२% विद्यार्थी स्वीकार करते हैं तथा २८% विद्यार्थी नहीं स्वीकार करते इसलिए उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है।
- जैविक उत्पादों की कीमत अधिक होने पर भी खरीदने के संबंध में यह निष्कर्ष निकलता है कि ७१.५% विद्यार्थी खरीदने के लिए सहमत हैं, तथा २८.५% विद्यार्थी नकारते हैं।
- जैविक उत्पादों से कम कैलोरी प्राप्त होती है इससे संबंधित प्राप्त जानकारी पर पता चला है कि २७.५% सही मानते हैं तथा ७२.५% विद्यार्थी सही नहीं मानते हैं अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि लगभग आधे से अधिक विद्यार्थियों को इससे संबंधित जानकारियां है।
- जैविक किसान उर्वरकों का प्रयोग नहीं करते हैं इसकी जानकारी ५०% विद्यार्थियों को तथा ५०% विद्यार्थियो को नहीं अत: निष्कर्ष यह निकलता है कि अभी विद्यार्थियों को और अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है।
- जीरो बजट प्राकृतिक खेती महंगी है इससे संबंधित जानकारी प्राप्त करने पर निष्कर्ष यह निकलता है कि इसकी जानकारी कुछ ही विद्यार्थियों को है तथा कुछ विद्यार्थी अभी वंचित है।
- जैविक कृषि गौ आधारित है इस संबंध में सभी विद्यार्थी जागरूक हैं। कुछ सूक्ष्म विद्यार्थी हैं जिन्हें जानकारी नहीं है वह ऐसे विद्यार्थी हैं जो कृषक परिवार से नहीं हैं।

Scanned with OKEN Scanner

- भारतीय कृषि में उर्वरकों का प्रयोग हरित क्रांति के बाद बहुतायत से होने लगा, इसकी जानकारी उपलब्ध करने पर पता चला कि ७५% विद्यार्थी इसे सत्य स्वीकार करते हैं तथा २५% विद्यार्थी इसे अस्वीकार करते हैं निष्कर्ष यह निकलता है कि इसकी जानकारी सभी कृषक परिवार वाले विद्यार्थियों को है।
- वर्टिकल फार्मिंग द्वारा बहुमंजली इमारतों में खेती की जाती है, इस संबंध में उपलब्ध जानकारी से पता चलता है कि ७०% विद्यार्थियों ने इसे सत्य स्वीकार किया है तथा ३०% विद्यार्थियों ने इसे अस्वीकार किया है। निष्कर्ष यह निकलता है कि बहुत से विद्यार्थियों को इसकी जानकारी है कुछ विद्यार्थी हैं जिन्हें इसकी जानकारी नहीं है इसलिए उन्हें जागरूक करना आवश्यक है।
- उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि छात्रों के मध्यमान में कोई अन्तर नहीं है। और यह भी कहा जा सकता है कि छात्रों तथा छात्राओं के मानक विचलन मे भी कोई विशेष अन्तर नहीं है।

५.२ शैक्षिक उपादेयता

कोई भी शैक्षिक अनुसंधान इसलिए किया जाता है कि शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं को पहचान कर उसका निदान किया जा सके और उन समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास किया जा सके। अनुसंधान तभी सार्थक हो सकते हैं, जब उसका कोई शैक्षिक महत्व हो तथा उसका लाभ छात्र-छात्राओं को प्राप्त हो सके।

प्रस्तुत लघु शोध प्रशिक्षु प्राध्यापकों में जैविक के कृषि प्रति जागरूकता का अध्ययन के शैक्षिक महत्व का लाभ छात्र-छात्राएं जागरूक होकर उठा सकते हैं।

प्रस्तुत लघु शोध शोधकर्ता द्वारा महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं की कमियों का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया है, इन कमियों को दूर करने में सुधार कर सकते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन जैविक कृषि प्राध्यापकों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होंगे।

यह अध्ययन सभी छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसका अध्ययन कर वह अच्छे विद्यार्थी के साथ-साथ कुशल कृषक के रूप में परिणित हो सकेंगे।

इसी प्रकार लघु शोध का अध्ययन छात्र- छात्राओं को जागरूक बनाने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगा।

Scanned with OKEN Scanner

५.३ अध्ययन के सुझाव

प्रस्तुत लघु शोध के संपादन में विभिन्न चरणों में शोधकर्ता द्वारा जैविक कृषि जागरूकता के विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं-हैं-

छात्र-छात्राओं के लिए सुझाव

- छात्र- छात्राएं जैविक उत्पाद खरीदारी में सक्रिय भूमिका निभाएं, जागरूक रहें।
- छात्र-छात्राएं नवीनतम जैविक सामग्री को ढूंढना अपनी आदत का एक अंग बनाएं।
- किसी भी जैविक जागरूकता पीड़ित व्यक्ति की मदद करें।
- जैविक कृषि जागरूकता संबंधी गतिविधियों/ कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर सहभागिता करें।
- स्वयं के माध्यम से जैविक कृषि जागरूकता संबंधी सफलतापूर्वक निस्तारित प्रकरणों का संग्रह करें एवं जनमानस के प्रकाश में लाएं।
- हमें अपनी खेती पर रसायनिक उर्वरकों का पूर्ण प्रतिबंध कर, जैविक खादों का प्रयोग करें।

प्रशासन हेतु सुझाव

जैविक कृषि में जागरूकता लाने हेतु हमारा प्रयास भी प्रयासरत् है परंतु कुछ ऐसे बिंदु हैं। जो अभी सुचारात्मक कार्यों से वंचित हैं। अध्ययन के समय शोधकर्ता ने यह पाया कि सरकार विभिन्न संप्रेषण माध्यमों की सहायता से जनमानस को जागरूक करती है, परंतु वह प्रयास पर्याप्त नहीं है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसी जागरूकता का अत्यंत अभाव है, अतः समय समय पर ख्वाब प्रशासन को मुनादी द्वारा व्यापक स्तर पर दीवार लेखन बैनर पोस्टर द्वारा नाटक इत्यादि कार्य किए जाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया समाचार पत्रों संचार संप्रेषण माध्यमों का प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है।

जैविक कृषि संबंध में सरकारी हेल्पलाइन नंबरों को बड़े अक्षरों में प्रदर्शित करना अनिवार्य किया जाना चाहिए।

५.४.अध्ययन की सीमाएं

शोधकर्ता ने प्रस्तुत लघु शोध समय एवं संसाधनों की कमी के कारण परिधि में रहकर किया गया-

Scanned with OKEN Scanner

- प्रस्तुत अध्ययन में प्रशिक्षु प्राध्यापकों को ही लिया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय स्तर के B.Ed. M.Ed., D.El.Ed., B.El.Ed. विद्यार्थियों को लिया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जनपद के कुछ ही तहसीलों में किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में २०० विद्यार्थियों को ही चुना गया है।

५.५. भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता ने प्रस्तुत लघु शोध में कुछ ही चरों, स्थानों को चुना गया है, कोई भी अनुसंधान कार्य कभी संपूर्ण नहीं होता है, उससे भी आगे शोध करने की संभावनाएं हमेशा बनी रहती हैं। प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित समस्या के क्षेत्र में भी अन्य कई अनुसंधान कार्य किए जा सकते हैं अतः भावी शोध हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत है-

- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जनपद के अलावा अन्य जनपदों का भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक माध्यमिक व उच्च स्तर के विद्यालयों में किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन प्रशिक्षु प्राध्यापकों के अलावा अन्य विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन में २०० विद्यार्थियों को ही चुना गया है तथा अधिक विद्यार्थियों को चुना जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शर्मा: अरुण के०।जैविक खेती :नई दिशाएँ।आगरा अग्रवाल प्रकाशन पृष्ठ सं०१८
- शुक्ल: डॉ०चन्द्र प्रकाश ।जैविक खेती। अजमेर
- सिंह राकेश नारायण ।जैविक खेती के नुस्खे। लखनऊ
- गुप्ता : एस०पी० ।जैविक खेती मे नवाचार। दिल्ली
- शर्मा : डॉ० आर०ए० शिक्षा अनुसंधान के मूलभूत एवं शोध प्रक्रिया
- सिंह :अरुण कुमार |मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ

Scanned with OKEN Scanner

Webliography

1. https://hindi.indiawaterportal.org/organic-farming-to-protect-environment
2. https://hindi.indiawaterportal.org/node/49843
3. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95_%E0%A4%96%E0%A5%87%E0%A4%A4%E0%A5%80
4. http://hi.vikaspedia.in/agriculture/best-practices/92893594092892492e-91594393793f-92a939932/91c94893593f915-916947924940
5. http://kisanhelp.in/organics-farming/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95-%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%B7%E0%A4%BF-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%A3-%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%B2%E0%A4%82%E0%A4%AC%E0%A4%A8
6. https://www.pravakta.com/organic-farming-and-rural-self-reliance/
7. https://www.pravakta.com/krishi-vichaar-manthan-se-amrittatw/
8. http://arganikbhagyoday.blogspot.com/2012/11/blog-post_8299.html
9. http://arganikbhagyoday.blogspot.com/2013/11/blog-post_7164.html
10. http://arganikbhagyoday.blogspot.com/2013/11/blog-post_761.html
11. http://bhagyodaydohajarbarah.blogspot.com/2013/11/blog-post.html
12. http://arganikbhagyoday.blogspot.com/2013/11/blog-post_4.html
13. http://arganikbhagyoday.blogspot.com/2013/11/blog-post_4330.html
14. http://arganikbhagyoday.blogspot.com/2013/11/blog-post_768.html
15. https://educatieneamt.files.wordpress.com/2013/01/questionnaire-czech-r.pdf
16. http://shodhganga.inflibnet.ac.in:8080/jspui/handle/10603/29432
17. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/214084

Scanned with OKEN Scanner

परिशिष्ट

Scanned with OKEN Scanner

परिशिष्ट (क) शोध उपकरण

जैविक कृषि जागरूकता प्रश्नावली

निर्देशक

डॉ० राजीव अग्रवाल

शोधार्थी

लवलेश कुमार यादव

निम्न सूचनायें भरिए-

नाम..

लिंग..

कक्षा..

कॉलेज का नाम..

दिनांक..

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में जैविक कृषि जागरूकता का अध्ययन से सम्बन्धित है इसमें जैविक कृषि के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न/कथन हैं। दिये गये विकल्पों में से किसी एक पर सही (√) का चिह्न लगायें। इस प्रश्नावली में कुल चार खण्ड हैं सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल लघु शोधकार्य में प्रयुक्त की जायेगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

Scanned with OKEN Scanner

खण्ड (अ)

1. जैविक कृषि करते हैं-

(अ) स्थानीय स्तर पर निर्मित गोबर एवं प्राकृतिक खादों का प्रयोग करके (ब) रासायनिक उर्वरकों का पूर्ण प्रतिबन्ध करके (स) दोनों (द) दोनों नहीं

2. आप समान्यत: कब-कब जैविक उत्पाद खरीदते हैं

(अ) सप्ताह में कभी-कभी (ब) सप्ताह में एक बार (स) महीने में एक बार (द) साल में एकाधबार

3. आप समान्यत: जैविक पदार्थ कहाँ से खरीदते हैं

(अ)स्थानीय दुकानदार (ब) मेला/प्रदर्शनी (स) ऑनलाइन (द) उत्पादक से

(य) मॉल

4. आप किस तरह के जैविक उत्पाद खरीदते हैं?

(अ) आनाज (ब)फल (स) सब्जियाँ (द) अन्य (कृपया इंगित करें)-

5. आप जैविक उत्पाद क्यों चुनते हैं?

(अ) नैतिक कारण (ब) पर्यावरण संरक्षण (स) पदार्थ की गुणवत्ता

(द) मूल्य/दर

6. निम्न में किस उत्पाद का अधिक प्रयोग करते हैं-

(अ) देशी गेहूँ (ब) वरायटी गेहूँ (स) देशी टमाटर (द) वरायटी टमाटर

(य)देशी आँवला (र) हाइब्रिड़ आँवला (ल) देशी बैगन (व) वरायटी बैगन

7. हम अपने खेतों में प्रयोग करते हैं।

(अ) रासायनिक उर्वरक (ब) जैविक खाद (स) दोनों (द) कोई नहीं

8. पौधों (फसलों) के वृद्धि एवं विकास के लिए कितने पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है ?

(अ) 14 (ब) 25 (स) 16 (द) 21

9. जैविक खाद बनाने की पद्धति है?

(अ) इन्दौर पद्धति (ब) नाडेप पद्धति (स) ढेर पद्धति (द) सभी

10. रासायनिक खाद के अधिकाधिक प्रयोग से कौन-सा रोग बढ़ रहा है?

Scanned with OKEN Scanner

(अ) कैंसर (ब) मिर्गी (स) मलेरिया (द) टिटनेस

11. राष्ट्रीय जैविक खेती केन्द्र कहाँ है?

(अ) गाजियाबाद (ब) मेरठ (स) फैजाबाद (द) कानपुर

12. भारत का सम्पूर्ण जैविक राज्य कौन-सा है?

(अ) केरल (ब)सिक्किम (स) पंजाब (द) हिमाचल प्रदेश

13.भारतवर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है-

(अ) रोजगार (ब)कृषि (स) नौकरी (द) कारखाने

खण्ड (ब)

	सहमत	असहमत	नहीं जानते
14.जैविक कृषि वातावरण के प्रति दयालुतापूर्ण/हितैषी है।	☐	☐	☐
15.हम अपनी खेती के खरपतवार, कीट एवं रोगों पर नियत्रंण बिना रसायनों के नहीं कर सकते हैं।	☐	☐	☐
16. जैविक कृषि वैदिक कालीन प्राचीन परम्परागत कृषि पद्धति है।	☐	☐	☐
17.जैविक कृषि आधुनिक कृषि की तुलना में अधिक लाभदायक है।	☐	☐	☐
18. आजकल जैविक कृषि अधिक लोकप्रिय है।	☐	☐	☐
19. जैविक कृषि आज के समय में व्यावहारिक नहीं है।	☐	☐	☐
20.जैविक कृषि किसानों को अपने ज्ञान एवं कौशल के भरपूर उपयोग का अवसर प्रदान करती है।	☐	☐	☐
21. जैविक कृषि मानव तथा मृदा दोनों के स्वास्थ के लिये हितकारी है।	☐	☐	☐
22. आधुनिक कृषि से निराश किसानों के लिये जैविक कृषि एक वरदान है।	☐	☐	☐
23. वर्मी कम्पोस्ट बनाने में प्रयुक्त आयातित केचुआ (आयसेनिया फिटिडा) मृदा के लिये हानिकारक है।	☐	☐	☐

Scanned with OKEN Scanner

खण्ड (स)

24 क्या आप कृषक परिवार से हैं? हाँ ☐ नहीं ☐

25.आपके कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल....................बीघा है।

26. आपके परिवार में कृषि की जाती है। स्वयं ☐ बटाईदार द्वारा। ☐

27. क्या आप मानते हैं कि जैविक उत्पाद स्वास्थ्य वर्धक है? हाँ ☐ नहीं ☐

28. जैविक उत्पादों की कीमत अधिक होने पर भी क्या आप उन्हें खरीदेंगे?

हाँ ☐ नहीं ☐

खण्ड (द)

29. जैविक उत्पदों से कम कैलोरी प्राप्त होती है। सत्य ☐ असत्य ☐

30. जैविक किसान उर्वरकों का प्रयोग नहीं करते हैं। सत्य ☐ असत्य ☐

31.जीरो बजट प्राकृतिक खेती मंहगी है। सत्य ☐ असत्य ☐

32. जैविक कृषि गौ आधारित है। सत्य ☐ असत्य ☐

33. भारतीय कृषि में उर्वरकों का प्रयोग हरित क्रान्ति के बाद बहुतायत से हाने लगा।

सत्य ☐ असत्य ☐

34. वर्टीकल फॉर्मिंग द्वारा बहुमंजली इमारतों में खेती की जाती है।

सत्य ☐ असत्य ☐

35. जैविक कृषि को लोकप्रिय बनाने हेतु आपके सुझाव -

....

....

....

....

....

Scanned with OKEN Scanner

परिशिष्ट (ख) जैविक कृषि जागरूकता फलांकन सारणी

परिशिष्ट (ग) समाचार पत्र

www.jagran.com

झंकार

सामुदायिक खेती की ओर शहरी भारत

Scanned with OKEN Scanner

परिशिष्ट (ग) समाचार पत्र

युवा Youth

खेती की ओर बढ़ा युवाओं का रुझान

लखंड में विकास का आधार

गे असेनिया फेटिडा केंचुए

जागरण

फूलों की खेती से 'महकी' जिंदगी

बुंदेलखंड में पैदा होगा हैदराबादी रा

संकल्प 2019

Bio-Data

mail – yadavlavleshkumar25@gmail.com

Name	:	Lavlesh Kumar Yadav
Father's Name	:	Shri Ram Gopal Yadav
Mother's Name	:	Smt. Devrati Devi
Add	:	Vill-Itra Milauli Post-Bisanda T-Atarra (Banda) 210203
Mob. No.	:	9198464074
DOB	:	04/09/1990

Education-

Qualification	Board/University	Year	Roll No.	Max. Mark	Ob. Mark
Highschool	U.P. Board Allahabad	2006	1552616	600	278
Intermediat	U.P. Board Allahabad	2008	28545	1000	717
B.Sc.AG	BU Jhansi	2012	301121060121	2400	1664
B.Ed.	BU Jhansi	2015	5091509141660 046	1000	674

ENGTH :-

- Hard Working
- Positive Thinking

Date :
Place : ATARRA (BANDA)

लवलेश कुमार यादव
(Lavlesh Kumar)

Scanned with OKEN Scanner

छात्राध्यापकों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता का अध्ययन (बाँदा जनपद के सन्दर्भ में)

©सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन मूल्य: 79₹

ISBN: 978-93-5773-654-1

9 789357 736541